श्री अमर भारती

वीरायतन की मासिक पत्रिका जनवरी-2021 वर्ष: 64 अंक: 01

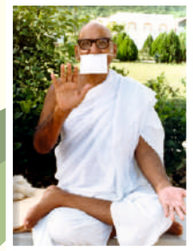

संस्थापक
उपाध्यायश्री अमरमुनि

दिशा-निर्देश
आचार्यश्री चन्दनाश्रीजी

•

सम्पादक
साध्वीश्री साधनाजी

•

महामंत्री
तनसुखराज डागा

उद्‌बोधन

आप आप ही जीनेवाला,
मनुज नहीं वह पशु प्राणी है।
खुद जिए परहित जो सोचे,
वही मनुज है कल्याणी है।।

सज्जन तो होते हैं, चन्दन,
महक न निज कम करते हैं।
अंग विदारक खर कुठार का,
मुख सुगन्ध से भरते हैं।।

चित्त मधुर हो, वचन मधुर हो,
कर्म सभी हो मधुर-मधुर।
तन-मन से जो मधुर भाव में,
रत रहता है वही चतुर।।

-उपाध्याय अमरमुनि

This issue of Shri Amar Bharti can be downloaded from our website- www.veerayatan.org

अनुक्रमणिका

उद्‌बोधन	उपाध्याय अमरमुनि	01
नियति का सर्वतोष दर्शन	उपाध्याय अमरमुनि	03
एक निष्णात शिल्पी के द्वारा ...	साध्वी शिलापी	08
शुभम् जी के नाम पत्र	उपाध्याय अमरमुनि	10
युवाचार्य श्री शुभम्‌जी एक परिचय	.....	11
वे अन्तिम क्षण, जिन्हें मैंने जाना	साध्वी शिलापी	13
गुरोरुक्त वाक्ये मनो यस्य लग्नम्	डॉ. साध्वी चेतना	18
You will always be in my prayers!	साध्वी संघमित्रा	19
...मन नहीं मानता है	साध्वी सम्प्रज्ञा	20
संग छतां असंगपणु!	साध्वी विभा	21
अपरिमित है! अमिट है!!	उपाध्याय यशा	23
श्रद्धांजलि सभा	वर्चुअल	24
श्रीमद् राजचंद्र मिशन	पत्र	41
श्रद्धांजलि समाचार पत्रों में	.....	42
"सौरभ" वीरायतन की	सौ. निरंजना, चुत्तर परिवार	43
अमेरिका में श्रद्धांजलि सभा	साध्वी शाश्वत	45
पत्रों में श्रद्धांजलि	.....	47

दीक्षित होने के बाद साध्वी शुभम्‌जी को पूज्य गुरुदेव के सानिध्य में संस्कृत भाषा एवं जैन धर्म के ग्रन्थों के अध्ययन का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

नियति का सर्वतोष दर्शन

– उपाध्याय अमरमुनि

अनन्तानन्त अतीत से काल की अविराम यात्रा जीवन के कटु-मृदु अनुभवों को प्राणों में स्पंदित करती हुई चल रही है। न जाने कितने घात-प्रतिघात, उत्थान-पतन और सृजन-संहार की कथा-यात्रा अतीत के स्मृति प्रदेश को आंदोलित कर रही है। कहीं सबकुछ अनजाने ही घटता चला गया है। उद्‌भव, स्थिति और संहार का अलक्ष्य कौतुक, जिज्ञासा की परत-दर-परत अपने ज्ञानकोष में समेट रही है। पर, यह एक ऐसा चक्र है, जिसके निर्णायक बिंदु का साधारण जन-मन को कहीं पता नहीं है? अरमानों की एक सजी-संवरी आस्था को लेकर मनुष्य विकास की धारा में गतिमान होने को प्रस्तुत होता है, पर उसके हर पदक्षेप में नियति की एक अदृष्ट महाशक्ति इस रूप में खड़ी रहती है कि मानव की संकल्पित इच्छा एवं योजना के विपरीत वह जिधर भी मोड़ देती है, उधर ही उसे मुड़ जाना पड़ता है। जिन भग्न सेतुओं के साथ वह जोड़ दे, वहाँ उसे जुड़ जाना पड़ता है। ऐसा लगता है कि बिखरे हुए तमाम मंतव्य अभी-अभी पकड़ में आ जायेंगे, पर शीघ्र ही वे ऐसे छूट जाते हैं,

उनके अस्तित्व का भी कहीं अता-पता नहीं रहता। समय की वेगवती धारा उन तमाम मंतव्यों को बहाये लिए जाती है और हम लुटे-लुटे-से, हतप्रभ हो किनारे पर असहाय खड़े रह जाते हैं। आँखों की कोरों में छलक आयी दो बूंदें भी साहचर्य सुख नहीं दे पाती और तत्कालीन वेदना की स्पंदनहीन अवस्था में उसे ढुलकते देखकर हम शून्य में ताकते रह जाते हैं। कहीं चीड़-वन से छनती हुई चाँदनी प्रिय के अवसादग्रस्त मुखमण्डल पर पड़ती है और सहसा अतीत की अनथक स्मृतियाँ पीड़ा के पट खोल देती है। हम नहीं चाहते, पर फिर भी कोई कोयल अरण्य के कोने में कुहकमयी वाणी बोल उठती है।

उक्त स्थिति-चित्र पर से स्पष्ट है कि काल के इस लीला-चक्र में जो कुछ भी हो रहा है, वह सब-का-सब पूर्व नियत है। कहीं कुछ अपने आग्रह का करणीय नहीं है। पूर्व नियत प्रक्रिया में सबको चलना है। काल की गति बड़ी निर्मम है। उसकी राहें कहीं सम हैं, तो कहीं विषम हैं। परदे के पीछे नियति की अविराम लीला जारी है। अबोध मन-मस्तिष्क के व्यक्ति कहते हैं कि इसे हमने किया है। यह धन-सम्पत्ति हमारी है। यह परिवार-परिजन हमारे हैं। इसे मैंने बचाया है, और उसे मैंने मारा है। न जाने कितने व्यर्थ के दायित्व अपने क्षुद्र अहं पर लादे रहते हैं।

मानव के जीवन-प्रांगण में कभी अनुकूल तो कभी प्रतिकूल, अनेकविध घटनाओं के संयोग-वियोग, मिलन और विछोह के कटु-मदु अध्यायों का निर्माण हर क्षण होता रहता है। एक ओर जीवन संवेग की एक-एक कड़ियाँ जुड़ती हैं और दूसरी ओर पारद की भाँति न जाने कैसे बिखरती चली जाती हैं।

चेतना का अन्तरंग मधुरिम प्रदेश अघटनीय को आत्मसात् करना नहीं चाहता है, पर न चाहने से क्या होता है? अनचाहा भी सब-कुछ घटता चला जाता है। पलक अभी पूरी तरह खुल भी नहीं पाती है कि सपना टूट जाता है। मनुष्य चाहता, तो बहुत कुछ है, पर अन्ततः वह क्या और कितना पाता है, यह सभी के अपने-अपने जीवन क्षेत्र की प्रत्यक्ष अनुभूति है, जिसे यों ही नकारा नहीं जा सकता।

ये प्रश्न हैं- प्रश्नों के अम्बार हैं, जो मृग-मरीचिका में दौड़ रहे हैं? वह सागर कहाँ है, जो दृष्टि को रसाप्लावित कर सके? सूर्य की सुनहली किरण रेत के ऊबड़-खाबड़ टीले पर पड़ती है और एक भ्रम-दृष्टि में समा जाता है। एक तीव्र दौड़ चलती है, पर बीच राह में ही जीवन-लीला समाप्त हो जाती है। यात्रा अधूरी रह जाती है। प्रश्न फिर पनपते हैं। यही

क्रम है। यह क्रम निरवधि हैं। इसका कहीं कोई ओर-छोर नहीं है। एक अखण्ड श्रृंखला के रूप में सब-कुछ पूर्व-नियत है।

अतीत, अनागत और वर्तमान की सारी क्रियाएँ, दार्शनिक चिन्तन की सुनिश्चित 'नियति' नामक एक अदृश्य शक्ति के हाथों संचालित हैं। 'अहं करोमि' के रूप में व्यक्ति का कर्तृत्व-बोध, बोध नहीं, कल्पित अहंकार है। यह अहंकार जीवन को पीड़ित करता रहता है। अनागत के प्रति अनास्था उत्पन्न करता है। शाश्वत के प्रति शंका उत्पन्न करता है। जीवन को विभ्रम के मायाजाल में फंसा कर उपहासास्पद तांडव नृत्य करवाता रहता है। यह नृत्य की प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती और मनुष्य जल-बुद्बुद के समान एक झटके में सहसा समाप्त हो जाता है।

अतीत में जितनी क्रियाएँ सम्पादित हो गई है, तथा जो प्रत्यक्ष वर्त्तमान की महालीला में अभी दृष्टिगोचर हो रही हैं, या जो अनागत के प्रति आस्था और अनास्था के सेतु निर्मित कर रही हैं, वे सब-की-सब पूर्व निर्धारित है, पूर्व नियत है और पूर्व नियत ही होंगी। नियति से पृथक् कुछ नहीं है। ज्ञान-ज्योति से दीप्त चेतना का धनी साधक सहज भाव से कर्ता नहीं, अपितु द्रष्टा बनकर घटना-प्रवाह को तटस्थ दृष्टि से निहारता चला जाता है। वह देखता है कि अणु-अणु का स्पन्दन भी पूर्व नियत है। भाव-भूमि की ऊर्जा और उष्मा के सारे तरंग पूर्व नियत हैं।

जीवन-मृत्यु की सारी क्रीडाएँ पूर्व नियत हैं। काल का अबाध रथ-चक्र किस ओर, किस गति से चलता है, इसे कौन कह सकता है?

मोहमूढ़ व्यक्ति स्वयं के परिकल्पित कर्तृत्व-बोध के अहं में एक फूली हई लाश की तरह इस संसार-सागर में डूबता-उतरता रहता है। वह विस्फारित नेत्रों से महाकाल के नर्तन को देखता है और व्यग्र होकर सफलता और असफलता के द्वन्द्व पाश में उलझता जाता है। कभी हर्ष-हास्य तो कभी रोष-रुदन। बस, इन्हीं दो बिन्दुओं पर उसकी भटकन होती रहती है। परन्तु प्रबुद्धचेता वीतराग-ज्ञानी राग-विराग की, अर्थात् मोह और क्षोभ की तमाम सीमाओं और संभावित परिस्थितियों की, उद्वेलन की गयी अवस्थाओं के पार चला जाता है और जगत् के समग्र शुभाशुभ घटनाचक्रों के संबंधों में समत्व की आत्मलक्षी दिव्य-ज्योति का दर्शन करता है। वह संज्ञा एवं विशेषण की तमाम परिधियों से अपने को मुक्त कर लेता है। अन्दर और बाहर सृष्टि के तमाम रहस्यों में उसे एक पूर्व-निर्धारित क्रमबद्ध योजना परिलक्षित होती है। वह नियति के अखण्ड, अबाधित एवं अविच्छिन्न सत्य को आत्मस्थ कर, स्वयं में अनुभूत कर निर्विकल्प भाव के मौन केन्द्र में

चंचलतामुक्त सुस्थिर हो जाता है। उसकी अहं से परिचालित वाचालता स्वयं समाप्त हो जाती है। जिस तरह गूंगा गुड के स्वाद का विवरण प्रस्तुत करने में असमर्थ होता है, उसी तरह जगत् के लीलामय रहस्यों की रसानुभूति का वर्णन इन्द्रियों के क्षुद्र उपकरणों के द्वारा कभी नहीं हो सकता।

प्रज्ञावान जीव को यह ज्ञात है कि जो कुछ भी घटित हो रहा है अथवा होने वाला है- उसमें अकस्मात् जैसा कुछ नहीं है। द्रव्य चाहे जड़ हो अथवा चेतन, जिसका जो भी पर्याय, परिणति, गति, स्थिति एवं परिवर्तन जिस काल और जिस क्षेत्र में, जिस अनुकूल या प्रतिकूल निमित्त एवं साधन से होना होता हो, वह होकर रहता है। क्यों? क्योंकि सब कुछ व्यवस्थित है। चर्म-चक्षुओं को ऐसा लगता है कि यह सारा-का-सारा हर्ष-विषाद, संयोग-वियोग, हानि-लाभ आदि का बिखराव तत्काल घटित होने वाली, क्रियमाण परिस्थितियों के प्रभाव से हो रहा है। पर ऐसा कुछ नहीं है।

तत्त्वदृष्टि से संपन्न मनीषी साधक को इस बात का पता है कि सब कुछ पूर्वनियत है। अकस्मात् जैसा कुछ नहीं है। व्यक्ति स्वयं हो, या अन्य कोई हो, वह नियति के अनुरूप इधर या उधर निमित्त तो हो सकता है, अन्य कुछ नहीं।

राम का जिस वक्त वनवास होता है, भरत व्याकुल हो जाते हैं। वनवास में निमित्तभूत अपनी माता कैकेयी पर रुष्ट होते हैं। किन्तु विक्षुब्ध भरत को नियति के परिप्रेक्ष्य में सान्त्वना देते हुए महर्षि वशिष्ठ समाधान देते हैं

'सुनहु भरत भावी प्रबल,
बिलखि कहेउ मुनि नाथ ।
हानि-लाभ, जीवन-मरण,
यश-अपयश विधि हाथ।।'

इस प्रकार के दो-चार क्या, हजारों और भी ऐसे अनेक प्रमाण हैं, जो नियति की महालीला का दिग्दर्शन कराते हैं।

यवनिका के पृष्ठ भाग में सारे पात्र पहले से प्रस्तुत हैं। अभिनय के क्रम में रंगमंच पर जब भी जिनकी उपस्थिति अपेक्षित होती है, नियमानुसार उनका आगमन होता है और वे अपनी नियत भूमिका अदा करते हैं। कार्यानन्तर पुनः यवनिका के पृष्ठभाग में चले जाते हैं। दर्शन की भाषा में यह शक्ति से व्यक्ति का, तिरोभाव से आविर्भाव का एक अभेद्य क्रम है। समुद्र में तरंगें उठती हैं, फिर उसीमें विलीन हो जाती हैं, उसी प्रकार हर द्रव्य एक सागर है, जिसमें पर्यायों का आविर्भाव और तिरोभाव निरन्तर होता रहता है। भविष्य के पूर्वाभास के संबंध में भी यह स्वीकार करना होगा कि वह पहले से ही

पूर्णरूप से निर्धारित, स्थिर एवं निश्चित स्थिति है, और उसका आधार नियति है, पर्यायों की क्रमबद्धता है।

होनी ही होती है। अनहोनी न कभी हुई हैं, न कभी होगी। शान्त चित्त से प्राप्त कर्म कीजिए। यदि उसे होना है, तो समय पर हो जाएगा। और यदि उसे नहीं होना है, तो न होगा। साधक को अनुकूल या प्रतिकूल दोनों ही परिणामों के लिए सहर्ष तैयार रहना चाहिए। किसी भी प्रकार की आकुलता की आवश्यकता नहीं है। आकुल होकर तो कुछ भी प्राप्त नहीं किया जा सकता। आकुलता से तो प्राप्ति या अप्राप्ति दोनों में ही शान्ति की अपेक्षा अशांति की ही संभावना अधिक रहती है। जो कुछ भी नियत है, प्राप्तव्य है, उसे संसार की कोई ताकत रोक पाने में समर्थ नहीं है, और जो अप्राप्तव्य है, उसे कोई प्राप्त कराने में सक्षम नहीं है। मनुष्य व्यर्थ ही विकल्पों में उलझता है। और उलझकर अपने स्वर्णिम समय को आलोचनाओं के कटु संवादों में परिणत कर देता है। यह संसार अपने नियत पथ पर गतिमान है। इसकी गति नियति से स्पन्दित है।

आत्मीय लोगों का भरपूर प्रेम और आशीर्वाद साध्वी शुभम्जी के जीवन की अनूठी संपदा थी।

एक निष्णात शिल्पी के द्वारा निर्मित मूर्ति स्वयं शिल्पी के समक्ष बिखर गई !

- साध्वी शिलापी

गुरु से आगे शिष्य

परम पूज्य ताई महाराज की अनुपम कृति- युवाचार्य श्री शुभम्जी महाराज। 13 वर्ष की छोटी उम्र से जिस अनगढ़ पत्थर को तराश कर पूज्य ताई माँ ने कोहिनूर हीरा बनाया, जिन शासन की सेवा के लिए एक सक्षम, विद्वान तेजस्वी साध्वीजी को तैयार किया। वीरायतन निर्माण की व्यस्तता, संघर्ष, कठिनाईयों में से समय निकाल कर स्वयं जैन, बौद्ध, वैदिक दर्शन का शुभम्जी को अभ्यास कराया। संस्कृत, प्राकृत भाषाओं में पारंगत किया और शतावधान जैसी विद्याओं में उन्हें निष्णात, निपुण बनाया। बचपन से साथ-साथ एक अंतेवासी बनकर-जहाँ ताई माँ ने कदम बढ़ा दिया, उस मार्ग पर बिना किसी प्रश्न, बिना किसी झिझक के सर्वात्मना समर्पण भाव से चले शुभम्जी। एक निष्ठा, एक समर्पण, एक भाव-बस ताई महाराज, ताई महाराज, ताई महाराज। 15-16 वर्ष की उम्र में ही वीरायतन बालिका संघ की प्रमुख बनकर वीरायतन के प्रचार-प्रसार के लिए देश के कोने-कोने में पहुँचे शुभम्जी और लोग पूछते कि इतनी छोटी शोभना क्या बोलेगी? क्या ज्ञान है उसके पास और तत्काल में जवाब होता शुभम् जी का– ताई महाराज के शब्द मेरा ज्ञान है, उनका आदेश मेरी दिशा है, उनका कहा कार्य करना, मेरा सौभाग्य है।

उस जौहरी, उस शिल्पी की पीड़ा पूछो जिसने वर्षों-वर्षों श्रम करके उस हीरे को बेजोड़ बनाया, अप्रतिम मूर्ति का निर्माण किया; उस माली से पूछो, जिसने अपनी बगिया में अपने अंतस् श्रम से वो सुगंधित पुष्प खिलाया, अपने तेजस्वी शिष्य को अपने समक्ष विदाई देनेवाले उस

मातृ तुल्य गुरु की अंतर व्यथा को कहने की सामर्थ्य, किन शब्दों में होगी?

जो छोटे होते हैं वे अपनी पीड़ा और दु:ख कह भी पाते हैं, आंखों से बहती अश्रुधार में अंतस् की वेदना बह भी जाती है लेकिन जो गुरुपद पर विराजमान हैं, महासागर की तरह जहाँ सबकी पीड़ाएँ विलीन होती रही हैं, जिनके अमृतपूर्ण शब्द सबको सांत्वना ही देते रहे हैं, वे अपने प्रियातिप्रिय शिष्य को खोने की पीड़ा किसे कहेंगे? कैसे कहेंगे? लेकिन नहीं कहेंगे पूज्य ताई माँ- कभी नहीं कहा, आज भी नहीं कहेंगे।

दर्द को आगोश में समाएँ,
तेरी यादों का दिया हम जलाएँगे,
तू कभी न मिट सके,
ऐसा तेरे नाम का आशियाँ हम बनाएँगे।

ताई माँ का ज्ञान, उनकी समझ, मात्र शब्दों एवं प्रवचन में नहीं, जीवन में आत्मसात हुई है प्रभु की बातें, उनका दर्शन, उनका सत्य। नियति के इस निर्मम निर्णय को अन्यथा नहीं किया जा सकता, इस भाव को सर्वात्मना स्वीकार के साथ, ताई माँ ने अपने अंतेवासी अनन्य शिष्य को विदाई देते हुए कहा- "शुभम्! तुमने पूरा जीवन सबका कल्याण किया, जहाँ गई, वहाँ सब मंगल ही मंगल हुआ, जहाँ स्पर्श किया वहाँ आशीर्वाद बरस गया और अब तुम नहीं हो लेकिन तुम्हारी याद में तुम्हारी स्मृति में कल्याण-कार्य अविरत चलता रहेगा। तुम्हें हॉस्पिटल में जाना अच्छा लगता था, मरीजों के बीच बोलना अच्छा लगता था। तुम्हारे जीवन से प्रेरणा लेकर यहाँ राजगीर, वीरायतन में एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर का Diagnostic Center बनाया जाएगा। इस उद्देश्य और लक्ष्य के साथ कि निदान के अभाव में कोई अपनों से न बिछुड़ जाए, व्यवस्था के अभाव में कोई उपचार रहित न रह जाए। राजगीर की जनता के लिए यह सेवा-उपक्रम तुम्हारी भावना अनुरूप बनाया जाएगा- जहाँ शाकाहार का संदेश, विश्व मैत्री की बात, सत्कर्म की प्रेरणा के शब्द गूंजते रहेंगे।

शुभम् तुम शुभ थी, कल्याण स्वरूप थी, मंगल थी और तुम्हारी यह शुभता विश्व में प्रचारित-प्रसारित हो- इसी मंगल भाव के साथ- पुष्पांजलि, श्रद्धांजलि, भावांजलि।

ॐ अहर्म

04-08-1986

आत्मप्रिय शुभा! सस्नेह स्वस्ति!

जब से तुम इधर से उधर गयी हो तब से तुम्हारी स्मृति बराबर अखण्ड रूप से स्मृति सरोवर में तरंगित होती रही है। और जब तुम्हारे सहज स्नेह श्रद्धा भक्ति से आप्लावित पत्र आते हैं, तो वह और भी उद्वेलित हो जाती है। नियति का चक्र है, अन्यथा संभावना नहीं थी कि तुम इतने लम्बे काल तक सुदूर प्रदेश में रहोगी। परन्तु जो होता है वह परदे के पीछे के संकेतों से अधिकतर ठीक ही होता है। मुझे प्रसन्नता है, तुम्हारा व्यक्तित्व ठीक दिशा में और ठीक तरह मुखरित हो रहा है। प्रचण्ड शेरनी की बेटी हो तुम। श्री मां चन्दनाजी की तरह ही निर्भय, निर्द्वन्द्व खूब मन लगाकर निर्भय भाव से जन-कल्याण के क्षेत्र में काम करती रहो, जैसा कि तुम्हारा नाम है।

स्नेह स्निग्ध शुभ की धारा बहाती रहो। इस धारा में बंजर भूमि को उर्वर कर देने की महती ऊर्जा तुममें है। यह संदेह से परे है, बस, जरा धुन चाहिए और कुछ नहीं। वीरायतन में तुम्हें सभी सस्नेह याद करते हैं। उस दिन की प्रतीक्षा है। जब बाईजी महाराज आदि के साथ तुम ताजा पुष्प की तरह हंसती, खिलती, महकती वीरायतन आओगी और वीरायतन में हम सब भी हंसते खिलते महकते मनोभाव से तुम्हें **स्वागतम् शुभे** कहेंगे। वीरायतन के कार्यक्रम गतिशील है। महायन्त्र के सभी पुर्जे अपने-अपने स्थानों पर नवनिर्माण में लगे हुए है। मेरा स्वास्थ्य अवस्था के अनुरूप जैसा है, ठीक ही है।

पूज्य बड़े महाराज एवं पूज्य बाई महाराज के आशीर्वाद उसे सहजता से प्राप्त थे।

"शुभं शुभायाः सततं ही भूयात्"।

मंगल कामना के साथ!

-उपाध्याय अमरमुनि

युवाचार्य साध्वी श्री शुभम् जी- एक परिचय

आचार्यश्री चन्दनाश्रीजी की शिष्या युवाचार्य श्री शुभम्जी एक मनीषी साध्वी रही है। उनकी धाराप्रवाह सुबोध वाणी अनेक विषयों पर विवेचन करती थी। किन्तु अपने विषय में वे कभी नहीं बोलती थी। वे आचार्यश्रीजी के उन शिष्यों में से थी जिन्होंने कभी अपना अस्तित्व गुरु से अलग देखा ही नहीं। गुरु-शिष्य का उनका यह सम्बन्ध था जिसका अन्तर्भाव अन्तेवासी शब्द में समाहित है। शिष्य निरन्तर गुरु के प्रति ग्रहणशील बना रहता है, गुरु की चेतना को अनवरत आत्मसात करता है और स्वयं के अस्तित्व को गुरु की चेतना में विसर्जित करता है। शुभम्जी ने अपनी श्रद्धा को गुरु के अनुशासन का पर्याय बनाया था मात्र कर्ण और जिह्वा का ही अर्पण नहीं किन्तु पूर्णता के साथ हर इन्द्रिय, मन का हर कोना, भावों की हर तरंग गुरु भक्ति में अर्पित थी।

मई 2013 में आचार्य श्री चन्दनाश्रीजी ने जब उन्हें अपने उत्तराधिकार के रूप में 'युवाचार्य' पद की गौरवपूर्ण चादर ओढ़ाई, उस समय के आचार्यश्री जी के मुखारबिन्द से अपनी इस शिष्या के लिए सहजभाव से प्रवाहित उद्गार हैं-

"साध्वी शुभम् जी मेरे इस कर्तृत्व सम्पन्न एवं श्रेयस्कर पथ पर समर्पित साध्वी संघ की एक महत्त्वपूर्ण साध्वी है। हर तरह से वे योग्य हैं। उन्होंने परम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री अमरमुनि जी महाराज के मुखारबिन्द से आगम पढ़े हैं और उन्हीं के चरणों में बैठकर संस्कृत, प्राकृत भाषा के कठिन से कठिन धर्मग्रन्थों, दार्शनिक ग्रन्थों एवं व्याकरण आदि विषयों का गहराई से अध्ययन किया है। देश-विदेश में उन्होंने तीर्थंकर महावीर के संदेश को विलक्षण एवं विचक्षण प्रज्ञा के साथ पहुँचाया है। वे शतावधानी हैं। सैकड़ों विशाल सभाओं में उनके शतावधान के सफल कार्यक्रम सम्पन्न हुए हैं।"

युवाचार्य साध्वी श्री शुभम्जी की विलक्षण स्मरण शक्ति के साथ विवेचन शक्ति भी अद्भुत थी। बचपन में ही उनकी इस अद्भुत क्षमता को आचार्यश्री जी ने देख लिया था अत: उम्र के पन्द्रहवें वर्ष में ही उन्हें बालिका मण्डल वीरायतन की मुख्य प्रवक्ता के रूप में गुजरात, मारवाड़, महाराष्ट्र आदि प्रान्तों में दूर-दूर तक प्रचारार्थ भेजा था और कहना न होगा कि आचार्यश्री के मिशन को उन्होंने उस उम्र में भी सफल बनाया था।

ज्ञान की अन्त:सलिला थी युवाचार्य श्री शुभम्जी। उन्होंने परम श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव के सहस्त्रश: प्रवचनों को लिपिबद्ध किया है। उनके इसी उदात्त कार्य से आज तक श्री अमर भारती पत्रिका गुरुदेव की दिव्यदेशना को जनता तक पहुंचा रही है। युवाचार्य पद वस्तुत: उनकी सरलता, उनके हृदय की उदारता एवं वत्सलता और उनकी वाणी में प्रवाहित सरस्वती का सम्मान था।

वे अंतिम क्षण, जिन्हें मैंने जाना

-साध्वी शिलापी

युवाचार्य साध्वी श्री शुभम् जी एक अनासक्त, अद्भुत व्यक्तित्व। पूज्य ताई मां की कृपा से ऐसी कुछ करामात थी, ऐसी चुम्बकीय शक्ति थी, जिनसे मिलते थे, उनका हो जाता था। सैकड़ों, हजारों दिलों में बसे शुभम्जी, दिसम्बर माह 2020 में कुछ अस्वस्थ हुए। डॉक्टर की रिपोर्ट के अनुसार उन्हें Jaundice की तकलीफ हुई और महानगर पटना में उनका इलाज प्रारंभ हुआ। लेकिन 8-10 दिन के उपचार के बाद भी कुछ अधिक स्वास्थ्य सुधार नहीं हुआ इसलिए पूज्य ताई मां ने वीरायतन के अध्यक्ष श्री अभय फिरोदिया जी के साथ विचार-विमर्श करके उन्हें तुरंत पूना भेजने का निर्णय किया। और पूना के डॉक्टरों ने कहा कि उन्हें Liver Cirrhosis है और जल्दी से जल्दी Liver Transplant करना पड़ेगा। जैसे ही मुझे यह समाचार मिलें, पूज्य ताई माँ की आज्ञा से मैं तुरंत शुभम् जी के पास पूना पहुंची।

31 दिसम्बर शाम को हम पूना में दीनानाथ मंगेशकर हॉस्पिटल के I.C.U. में पहुँचे, जहाँ शुभम्जी महाराज थे और जैसे ही उन्होंने मुझे देखा, उनके चेहरे पर एक प्रसन्नता, आंखों में चमक- जैसे इंतजार कर रहे थे और मुझे उस क्षण लगा कि उनकी इसी Welcoming Nature ने हजारों लोगों को बांधा था। इतनी अस्वस्थता में भी किसी के आने की खुशी- जब दूसरों को प्रमुख करके हम स्वयं गौण हो जाते हैं, तब संबंधों की डोर सहज मजबूत हो जाती है। मैंने शुभम्जी से पूछा

"आप कैसे हैं? एक क्षण भी विलम्ब किए बिना तत्काल में जवाब दिया- Wonderful... Wonderful." मैंने पूछा "What is wonderful Shubhamji"? तो उन्होंने कहा "Whatever it is, Everything is wonderful! No complains, no complains" मैं उनको देखकर, सुनकर अवाक् रह गई। पूरी जिन्दगी कभी किसी चीज की शिकायत नहीं की, किसी चीज की मांग नहीं की- बस दिया ही दिया। बचपन से लेकर जीवन के अंतिम क्षण तक बांटते ही रहे- प्रेम, मधुरता, ज्ञान जैसे शुभम्जी ताई माँ की बांसुरी थी। यदि ताई माँ प्रेम हैं, ज्ञान है तो शुभम्जी के माध्यम से वह प्रेम और ज्ञान हजारों-हजार लोगों तक पहुंचा। I.C.U. की अस्वस्थता कैसी होती है, सब जानते हैं- लेकिन उस अस्वस्थता में भी, सब सुन्दर, सब सुन्दर कहना, उनके अंतस् की Positive मनोवृत्ति थी और यही शुभम् जी के जीवन की सफलता थी। मेरे लिए शुभम्जी एक अंतरंग साथी, एक अंतरंग मित्र के रूप में थे। सब कुछ कहा और सुना जा सकता था। 35 वर्ष पूर्व दिल्ली युनिवर्सिटी से पढ़ाई करके मैं वीरायतन आई थी, वीरायतन का नया वातावरण, नए तौर तरीके, नया Culture लेकिन शुभम्जी थोड़े शब्दों में कुछ ऐसी बातें कह जाते जो महत्त्वपूर्ण बन जाती। I.C.U. में फिर मैंने उनसे पूछा और क्या कहना है शुभम्जी। उन्होंने कहा I am seeing a new world. It's a new world. Everything is dizzling dizzling . उनका वह संकेत कुछ कह रहा था और वह रात उनके जीवन की

वीरायतन का परिचय कराते हुए श्री चन्द्रशेखरजी के साथ साध्वी शुभम्जी

अंतिम रात थी, संभवत: लंबी यात्रा के प्रयाण की वह सूचना थी।

पूज्य ताई महाराज को अंत:करण पूर्वक याद किया। उनकी हर बात को याद कर गद-गद हुए शुभम्जी जैसे कह रहे थे-
'तेरे अहसान का बदला चुकाया जा नहीं सकता,
प्यार ऐसा दिया तूने, भुलाया जा नहीं सकता।'
ताई माँ की बात करते-करते आंखें गीली हो गई और कहा सबको याद करना, सबका ध्यान रखना।

नए वर्ष के दिन प्रात: मैं फिर I.C.U. में पहुंची और मैंने कहा "Good morning Shubhamji" और उन्होंने कहा "Yes Shilapiji" बस यही उनके अंतिम शब्द थे। इसके पश्चात नहीं बोले शुभम्जी महाराज। वो आवाज जो सैकड़ों दिलों में थी, जिसके मंत्रोच्चार में लोग अपना कल्याण समझते थे, और जिसकी उपस्थिति में श्रद्धालु मंगल अनुभूति करते थे, वो आवाज जैसे अनंत में विलीन हो रही थी।

I.C.U. के बाहर शुभम्जी के मुख्य चिकित्सक डॉ. सचिन पालनितकर मुझे मिले और उन्होंने कहा-

"Your Sadhviji is very intelligent, very sharp. Her IQ is very high. She understands everything. Even if you do not tell her about the transplant, she knows about it. It's difficult to hide things from her. Let's pray that everything goes all right and we shall be able to do her liver transplant."

Liver Transplant के लिए शुभम्जी को Jupiter Hospital लाया गया, जहाँ Liver Transplant के लिए अधिक आधुनिक और सुन्दर व्यवस्था है। शाम 4:00 बजे पीयूष बलदोटा बेंगलोर से पूना आए और अत्यंत प्रसन्नता और अनुग्रह भाव से शुभम्जी के लिए Liver Donation के लिए उन्होंने स्वीकृति प्रदान की। पीयूष और उनकी माता पुष्पा बलदोटा शुभम्जी को मिलने के लिए I.C.U. में गए और शायद शुभम् जी समझ गए कि पीयूष Liver Transplant के लिए आए है। बस उसी शाम 6:00 बजे से शुभम्जी की तबीयत बिगड़ने लगी, जैसे संकेत था कि Transplant नहीं चाहते हैं।

जिन्दगी में कभी किसी को तकलीफ नहीं दी, ऐसा असंग, निरपेक्ष जीवन, जिन्होंने बस देना ही जाना, आज कैसे ले लेते?

मात्र 13 वर्ष के थे, जब ताई महाराज के पास आए थे। पूज्य गुरुदेव के पास रामायण, महाभारत जैसे शीर्ष ग्रंथों का अध्ययन किया। शतावधान, मिलनसार, मधुर स्वभाव जैसे सहज गुणों के साथ उन्होंने अमेरिका, कनाडा, लंदन, अफ्रीका, सिंगापुर, मलेशिया, दुबई, मस्कत, हांगकांग, नेपाल इत्यादि अनेक देशों में

अनेक बार यात्रा की। जहाँ जाते मंगल बरस जाता, अत्यंत लोकप्रिय, सभी साथ रहना चाहते थे। संस्कृत के प्रखर विद्वान युवाचार्य शुभम्जी ने हजारों श्लोक कंठस्थ किये नहीं, हो गए। न्यूयार्क में शतावधान के एक कार्यक्रम में जहाँ हजारों लोग उपस्थित थे, किसी ने शुभम्जी को प्रश्न किया, "आप इतना सब याद कैसे रख लेते हो?" उनका तत्काल में जवाब था- "मैं कचरा याद नहीं रखती हूँ इसलिए अच्छी बातों को भीतर में रहने की जगह मिलती है।" यही शुभम्जी के जीवन का महत्त्वपूर्ण संदेश था। व्यक्ति छोटी-छोटी बातों को याद कर कचरा इकट्ठा कर लेता है और जीवन को विषाद्पूर्ण बना देता है। जीवन जीने में निष्णात, कुशल वह व्यक्ति है जो भूल सके, छोड़ सके- आगे बढ़ सके।

रात लगभग 12 बजें डॉक्टर्स काफी चिंतित थे, हम तीनों साध्वीजी I.C.U. के बाहर ही खड़े थे, डॉक्टरर्स ने कहा- स्वास्थ्य ठीक नहीं है। शुभम्जी का B.P. डाउन हो गया है, हीमोग्लोबिन 4 रह गया है, अधिक समय नहीं है। मैंने तुरंत ताई माँ को सूचना दी और कहा कि शुभम्जी के पास बहुत कम समय है। और ताई माँ ने बिना किसी विलम्ब के अत्यंत समता, धीरज और शांति से शुभम्जी महाराज को संथारा दिया। शुभम्जी की आंखें बंद थी लेकिन जैसे ताई माँ का एक-एक शब्द सुन रहे थे। ताई माँ ने जब कहा- "चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहु सरणं पवज्जामि, केवली पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि"
ये शब्द सुनते हुए जैसे उनके आंखों की कोर गीली हो गयी।

विचार जगत् के मनस्वी श्री एल. एम. सिंघवीजी के साथ वीरायतन के विस्तार की चर्चा कर रही हैं- शुभम्जी

चारों तरफ मशीनें, डॉक्टरर्स पूरा प्रयत्न कर रहे थे इस अनमोल जीवन को बचाने के लिए लेकिन शुभम्जी जैसे सबसे अलग थे। जैसे उनका सम्पूर्ण जीवन अनासक्त था, वैसे ही यह अंतिम समय भी सम्पूर्णत: अनासक्त था। संथारा ग्रहण के बाद कुछ घंटे और श्वास चली और

लोगस्स, नमोत्थुणं, आत्मसिद्धि, पार्श्वनाथ भगवान के लगातार श्रवण तथा स्मरण के साथ प्रात: 6:00 बजे अंतिम श्वास ली। चेहरे पर शांति, समाधि और समत्व भाव से देह-त्याग किया और आगे की दिव्य यात्रा पर निकल गए- युवाचार्य श्री शुभम्जी। जब भी मैं राजगीर आती पटना लेने के लिए आते और हमेशा कहते- "जब तक ताई माँ का सेवा कार्य अपने से होगा, करेंगे और फिर वैभारगिरी के नीचे झोंपड़ी बनाकर परमात्मा के दिव्य स्पर्श के साथ रहेंगे।" लेकिन प्रभु के मार्ग का वह अद्भुत पथिक, वह जागृत साधक, वह अनासक्त योगी- इस अध्यात्म यात्रा में आगे निकल गया।

बिहार के गर्वनर श्री किदवईजी को पुस्तकालय की प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों की जानकारी देते हुए शुभम्जी।

सब कह रहे हैं- शुभम्जी नहीं रहे लेकिन मैं कहती हूँ वे कहीं जा नहीं सकते। हजारों दिलों में उनकी मधुरता, उनका प्रेम जीवंत है, जीवंत रहेगा। उनकी मीठी यादों का अखूट खजाना, चिर काल तक प्रेरणा स्त्रोत रहेगा। अनासक्त, असंग सबके साथ थे लेकिन सबसे अछूते, सबसे अलग-जल में खिले कमल की तरह।

Unconditional love, boundless compassion were her natural synonyms. जीवन कैसा जीना चाहिए, यह अनमोल सीख देकर आगे की यात्रा पर निकले शुभम्जी। पूज्य गुरुदेव कहा करते थे, जब शुभम्जी हंसते है तो पेड़-पौधे हंसते हैं, पशु-पक्षी हंसते हैं, सम्पूर्ण प्रकृति हंसती है। Laughing Buddha के रूप में शुभम्जी हमेशा याद किए जाएंगे।

आइये, आत्मसात करे शुभम्जी के जीवन का यह मंत्र-

जिंदगी में सदा मुस्कुराते रहो,
फासले कम करो दिल मिलाते रहो।

और उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि समर्पित करें। आनंदित, अनासक्त, अद्भुत शुभम्जी! जिसका कोई जोड़ नहीं, वे बेजोड़ शुभम्जी! ताई माँ के अंतेवासी, प्रियातिप्रिय शुभम्जी! अमर रहे, अमर रहे, अमर रहे!

गुरुरुक्त वाक्ये मनो यस्य लग्नम्

-डॉ. साध्वी चेतना

मेरी गुरुबहन वस्तुतः गुरुबहन थी। गुरु का अर्थ होता है श्रेष्ठ और बहन होती है प्रेम व स्नेह का खजाना। वह श्रेष्ठता और स्नेहिलता की उभयमूर्ति थी। गुरु की आज्ञा ही जिसका जीवन लक्ष्य था। श्रद्धेय आचार्यश्री ताई माँ का जिस ओर संकेत होता उसी दिशा में उसके कदम बढ़ते चले जाते। न उसके कदम इधर मुड़ते न उधर। उसके मन का कण-कण गुरुभक्ति से आप्लावित था।

देश-विदेश की यात्रा करके जब-जब वीरायतन राजगृह में होती, प्रतिदिन नेत्र ज्योति सेवा मंदिरम् में मरीजों के बीच रहती। उन्हें सुखमय जीवन जीने के लिए सच्ची और सरल राह बताती, उनके व्यसन कैसे दूर हो सके उसकी शिक्षाप्रद बोध कथाएँ कहती। उनके सुख-दुःख की बातें सुनकर उन्हें निर्भार करती। तदनन्तर मेरे कार्य में सहयोग करती, मेरे कार्य की सराहना करती, हंसती-हंसाती। ऐसे मृदु-मधुर स्वभाव की मेरी गुरुबहन जिसके साथ मेरी अनेक यात्राएँ भी हुई हैं लेकिन कभी कोई ऐसा प्रसंग नहीं बना कि मन दुःख हुआ हो। ऐसी मीठी आनन्दमयी उसकी स्मृतियाँ मेरे स्मृतिकोष में सदा सर्वदा रहेगी। मैं उस आदर्श गुरुभक्त गुरुबहन को कभी भूल नहीं पाउंगी। वे प्रकाश की यात्रा में आगे बढ़ती रहे। यही प्रार्थना।

You will always be in my prayers !

- Sadhvi Sanghamitra

I celebrate a life of a living angle who touched hundreds of thousands of lives through the purity of her *Sadhanamay Jeevan*, through her humility and simplicity, through her love for nature and animal world and above all her dedication towards her Guru, *Jin Shashan* and the humanity. She lived to love and laugh, she lived to give and forgive, she lived to spread the word of Lord Mahavir around the world.

I am going to miss this wonderful, beautiful, divine soul who was like a gentle fragrant breeze, who was like the rain drop showering from above and was like a kite soaring high in to spiritual sky. She will always be in my prayers.

... मन नहीं मानता है

-साध्वी संप्रज्ञा

मन नहीं मानता है कि प्रियातिप्रिय युवाचार्य साध्वीश्री शुभम्जी महाराज हमारे बीच नहीं रहे क्योंकि उनका सौम्य, सरल मुस्कुराता हुआ चेहरा हर पल आँखों के सामने वीरायतन के कण-कण में अदृश्य रूप में नजर आ रहा है। उनका सुमधुर स्वर कानों में गूंज रहा है।

कला मंदिरम् में आनेवाले दर्शकों एवं स्कूल के बच्चों को अहिंसा, प्रेम और शाकाहार की प्रेरणा, तीर्थभूमि में आनेवाले श्रद्धालुओं को तीर्थंकर महावीर का जीवन और संदेश के साथ राजगृह का इतिहास की जानकारी देना, सात्विक जीवन जीने की प्रेरणा देना उनका सहज ही स्वभाव था। गौशाला में जाकर पशुओं को प्रेम से सहलाना उनसे बातें करना, पक्षियों को नियमित पानी, धान देना और घायल पक्षियों की चिकित्सा करना। उनके जीवन की ये सारी प्रवृत्तियाँ सहज प्रेम, दया और करुणा का प्रतीक थी। बाह्य जीवन में सहज रूप से विभिन्न प्रवृत्तियाँ करते हुए भी अन्तर जीवन में अपने आप में साधनामय निस्वार्थ जीवन रहा है उनका।

पूज्य युवाचार्य शुभम्जी महाराज के प्रभावशाली व्यक्तित्व ने हजारों दिलों को स्पर्श किया पर उनका दिल तो मात्र भगवान और गुरु के प्रति ही समर्पित रहा। मेरे लिए बड़ी बहन थी जो सदा मेरे हौसलें बुलंद रखने में प्रेरणा स्त्रोत रही। अत: वह देह से जा सकते हैं पर हमारे दिल से कभी भी नहीं जा सकते। अंतिम समय तक जिनके जीवन का हर क्षण पूज्य श्री ताई माँ के श्री चरणों में समर्पित रहा है। उनकी अनन्त-स्मृतियाँ मेरे मन-मस्तिष्क में ऊर्जा बनकर आज भी प्रेरणा दे रही है। वे सदा हमारे बीच में थे, 'है' और सदा रहेंगें।

संग छतां असंगपणु

-साध्वी विभा

संसार में कुछ व्यक्ति होते हैं जो दूसरों को अपना परिचय दिया करते है। कुछ लोग होते हैं जिनका समाज से परिचय कराया जाता हैं। लेकिन कुछ लोग वे होते हैं जो किसी के परिचय कराने के मुहताज नहीं होते! ऐसी थी मेरी प्यारी बहना- युवाचार्य साध्वी श्री शुभम्जी! जिनका अचानक हम सबके बीच से विदा हो जाना-असह्य है मेरे लिए! दोनों ने साथ ही दीक्षा ली। दोनों साथ-साथ रहे, साथ-साथ पढ़ना-लिखना, साथ साथ यात्रएं! अनगिनत स्मृतियां मन पर तरंगित हो रही है, जिन्हें शब्दों में मैं बांध नहीं सकती। देश-विदेश से, दुनिया के कोने-कोने से, लोगों के दिल-दिमाग से उसकी यशोगाथा, उसके गुणगान, उसकी जो स्तुति गाई जा रही है, सुन-सुनकर मेरा मन अहोभाव से गद्गद् हो रहा है।

नि:स्वार्थ उसका प्रेम, उसकी सहजता, सरलता, सौम्यता, उसका व्यक्तित्त्व और समागत लोगों के साथ बातचीत की पद्धति सब कुछ अनोखा था। खिलखिलाकर हंसना और हंसाना उसका मधुर स्वभाव था। शास्त्रों का गहरा अध्ययन और स्वाध्याय से अत्यंत प्रेम था। स्वाध्याय ही उसकी दुनिया थी ऐसा कहुं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। हर एक का अपनत्व ग्रहण करने की क्षमता भी अद्भुत थी उसमें। न कोई छोटे-बड़े का भेद था, न गरीब तवंगर का भेद। आसपास के बच्चे-चाहे वे स्वीपर के बच्चे हो या कोई और, सबको प्रेम से बुलाना, नवकारमन्त्र का उच्चारण करवाना, अच्छी-अच्छी बातें सिखाना, प्रार्थना कराना- उसे बहुत अच्छा लगता था। नेत्र ज्योति सेवा मंदिरम् में बड़े प्रेम से मरीजों को उद्बोधन देना, व्यसनमुक्ति और शाकाहार की प्रेरणा

देना, श्री ब्राह्मी कला मंदिरम् में आनेवाले दर्शकों को और विशेषकर स्कूल के बच्चों को तीर्थंकर महावीर के जीवन का संदेश देना-हजारों मरीजों, दर्शकों एवं स्कूल के बच्चों में सुसंस्कारों के बीज बोना-यह उसके उद्बोधन का मूल स्वर था। प्रकृति का संरक्षण और पशु-पक्षी से अत्यंत गहरा प्रेम था उसे।

कुछ वर्षों पहले की बात है। वह ध्यानमेरु से बाहर आयी तो उसने देखा कि एक Female Dog जिसकी आँखों में आंसू है- शुभम्जी ने उसके आंसु पोंछे और बहुत प्यार से पूछा- तुम्हें क्या हुआ? तुम क्यों रो रही हो? वह बेचैनी में आंसु के साथ तड़पते हुए सिर हिलाकर कुछ कहना चाहती थी। शुभम्जी ने उसके दु:ख का कारण जानने के लिए आसपास में काम करते लोगों से पूछा- यह ऐसा क्यों कर रही है? इसको क्या हुआ? इसके बच्चे कहां हैं? उन लोगों ने कहा- कुछ लोग यहां आये थे-इसके बच्चों को बोरे में भरकर, ट्रक में डालकर अभी-अभी ले गये हैं। इसलिए यह रो रही है। शुभम्जी ने तुरंत बाहर गेट पर फोन किया, और एक व्यक्ति को बाइक पर दौड़ाया और ट्रक का पीछा करके ट्रक को रूकवाया। ट्रक से वह बोरा लाकर उन छोटे-छोटे बच्चे को उस की माँ के पास छोड़ा। उसके बाद भी शुभम्जी बच्चों को सहलाते हुए काफी देर तक रोती रही। बाद में उसने आहार ग्रहण किया। अत्यंत कोमल हृदय एवं दया और करुणा की प्रतिमूर्ति थी वह।

ध्यानमेरु-साध्वी संघ में सभी के साथ अत्यंत प्रेमपूर्ण संबंध था उसका फिर भी "संग छतां असंगपणु मूके नहीं रे ज्ञानी" ऐसी थी मेरी बहना साध्वी श्री शुभम्जी! उसकी साधना की सुगंध वीरायतन के कण-कण में रमी हुई है।

आज अत्यंत भावपूर्ण क्षणों में निरन्तर बहते आंसुओं के साथ उसके सद्गुणों का स्मरण करते हुए,उन सद्गुणों का अनुसरण करती रहुं, इस भाव के साथ भावांजलि अर्पित करती हूँ।

अपरिमित है! अमिट है!!

-उपाध्याय यशा

अवश्यंभावी अर्थात निश्चित रूप से घटित होना ही है। उस होनी को, कोई अनहोनी में नहीं बदल सकता है। वह घटनेवाला अप्रिय हो या अनचाहा भी क्यों न हो, उसे कोई टाल नहीं सकता। स्वयं सर्व शक्तिमान परमात्मा भी नहीं। जीवन का यह अटल सत्य है "मृत्यु"।

इसे प्ररूपित करनेवाले शास्त्रों के पन्नों में, प्रार्थना के स्वरों में स्वाध्याय की चिन्तन तरंगों में बार बार मन-मस्तिष्क बहा है। बहुत पढा, विश्वास किया-"यही सत्य है।"

किन्तु नियति का कटु सत्य हमारे अपने अत्यन्त आत्मीय को, जीवन के एक प्रिय हिस्से को अलग कर देता है हमसे, तब विश्वास नहीं होता, लगता है- इसे झूठला दें।

अन्य सभी प्रकार से, जो चाहा, वह पाया, जो सोचा वह किया, किसी जगह किसी रूप में हार नहीं मानी। अपने को सक्षम-समर्थ पाया। किन्तु घटना चक्र विचित्र गति से जब घुमता है, तब क्या हो जाता है? कितने असहाय, विवश रह जाते हैं हम। अपने आत्मीय जन को बचा नहीं पाते, सुरक्षित रख नहीं पाते। सबकुछ पानी की तरह बह जाता है, हमसे दूर हो जाता है, हम कुछ नहीं कर पाते हैं। कुछ भी नहीं.....।

गहनतम तीव्र वेदना में, एक सूक्ष्म भाव जगता है।

कैसे भगवान पार्श्वनाथ, भगवान महावीर हमारे प्राणों में रमे हुए हैं। कैसा है वह अटूट अनश्वर भाव जहाँ सुरक्षित हैं, स्थिर हैं- "मुनीश! लीनाविव कीलिताविव, स्थिरौ निखिताविव बिम्बिताविव।"

सुगंधित हवा के झोंके बह जाते हैं, पर सुगंध शेष है। पानी बह जाता है पर ठंडक अनुभव में है। बिन बाती बिन तेल, दिया जले दिन-रात। "ऐसी अवस्था हम अनुभव करते हैं, खुली आंखों के सामने जो था, वह नहीं है, फिर भी वह सबकुछ मौजूद है"- समय के प्रवाह में जो किया, जो जीया, जो पाया। मृत्यु भी मिटा नहीं पायेगी। न ही मिट पायेगा, न ही भूलाया जायेगा। युवाचार्य शुभम्जी इतने गहरे और सूक्ष्म भावों में रहे हैं, एकरूप होकर जीये हैं, कि वे आज भी है, कल भी रहेंगे। बार-बार यह उपस्थिति स्मृति में उभरेगी, अपने साथ होने का एहसास करायेगी। उनके जीवन की आत्यन्तिक निकटता आत्मीयता, प्राज्ञ-निर्मलता भव्यता का अनुभव करते हुए प्रणामांजलि अर्पित करते हैं।

श्रद्धांजलि सभा

04.01.2021

दिसम्बर 4 जनवरी 2021 को वीरायतन राजगीर में पार्श्व जिनालय परिसर में युवाचार्य शुभम्जी के लिए श्रद्धांजलि सभा रखी गयी जिसमें देश-विदेश के अनेक भाविकों ने अपने-अपने उद्गार व्यक्त किये। श्रद्धेय आचार्य श्री ताई मां के वात्सल्योद्गार के साथ वीरायतन के अध्यक्ष श्री अभय फिरोदियाजी, मंत्री तनसुखराज डागा तथा अनेक शीर्ष संतों एवं विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों ने श्रद्धांजलि अर्पित की जो अमर भारती के सुधी पाठकों के लिए प्रस्तुत की जा रही है-

श्रद्धेय आचार्यश्री ताई माँ का उद्बोधन

अत्यंत भावपूर्ण क्षण है। सत्य तो सत्य है लेकिन हृदय को ग्राह्य नहीं है। मन खोज रहा है शुभम् को चारों दिशाओं में। ज्यूपिटर हॉस्पिटल में साध्वी श्री श्रुतिजी, साध्वी श्री शिलापी जी एवं साध्वीश्री मनस्वीजी साथ में थे। अत्यंत सजगता के साथ शिलापीजी अन्तिम समय तक निकट रही।

शुभम्जी हजारों चेहरों पर मुस्कान बिखेरती रही है। अगणित लोगों के हृदय को सुगन्धित करती रही है। बचपन से ही वह मेरे साथ रही है। पचपन वर्षों तक का उसका सान्निध्य है लेकिन एक भी शब्द से उसने कभी मुझे दु:खाया हो ऐसी कोई स्मृति नहीं है। ऐसा एक निश्छल, सरल और तरल भाव प्रवाह की तरह रहा है उसका जीवन।

शुभम्, नाम से ही नहीं जीवन से भी शुभम् थी। जो कार्य सौंपा जाता उसे सम्पन्न करके ही लौटती थी। लेकिन एक काम उसने नहीं किया, पूना हॉस्पिटल में भेजा था कि जाओ! स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करके आओ। इस कार्य में वह हार गई। सत्यत: वह हमारी ही हार हो गई।

पूना में वे दस दिन रही। इस समय में श्री अभय फिरोदिया ने 'बाबा' श्री नवलमल फिरोदिया की तरह सम्पूर्ण व्यवस्था को संभाला। श्री शुभम्जी को, डॉक्टरों को और हम साध्वी संघ को परिवार के एक बड़े सदस्य की तरह सब को बखुबी सम्भाला है। डॉ. अजय ठक्कर तो साध्वी संघ के हर कार्य के लिए सदा तत्परता से स्वास्थ्य सम्बन्धी सहयोग के लिए तैयार रहते हैं। इन दोनों के लिए धन्यवाद शब्द बहुत छोटा है। उनकी भावनाओं का मैं हृदय से सम्मान करती हूँ। इसी तरह शुभम्जी की बड़ी बहन का बेटा पीयूष बलदोटा पूर्ण उत्साह के साथ अपना लीवर देने के लिए बेंगलोर से पूना आया। उसके शब्द थे, "यह मेरा सौभाग्य है कि मैं अपनी मौसी को अपना लीवर दे सकुं।" पीयूष के पिता मदनजी ने वीरायतन को बेंगलोर में जमीन दी है। मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि नयी पीढ़ी के लोग इतने भावनाशील और परोपकार परायण हैं, वे भविष्य में भी निश्चित रूप से अच्छे कार्य करेंगे। शुभम्जी के भाई महेन्द्र एवं चन्द्रकान्त चुत्तर का पूरा परिवार निरन्तर रात-दिन सेवा में उपस्थित रहा। इसी प्रकार मेरे भाई डॉ. रामलाल कटारिया एवं छोटी भाभी आशा कटारिया तथा सज्जनबाई बोथरा की सेवा-आत्मीयता पूर्ण रही। अन्तिम संस्कार के समय श्री आदेश खिंवसरा, श्री विजयकान्त कोठारी जैसे महत्त्वपूर्ण लोगों ने सम्पूर्ण सहयोग दिया। सुरभि बहन तथा डॉ. उत्पल ने भी अपनी ओर से सेवाएँ दी। मैं उन सबको धन्यवाद अर्पित करती हूँ। विशेष रूप से

साध्वी शिलापी जी एवं दोनों साध्वीजी के साथ सभी लोगों ने ऐसे कठिन समय में जिस प्रेम एवं आत्मीयता से श्रद्धापूर्वक सेवाएँ दी है, प्रशंसनीय है। वे सब भाग्यशाली है कि वे शुभम्जी की सेवा में तत्पर रहे। यह जिन शासन की सेवा है। अभिनंदनीय है, बड़ा पुण्य का उपार्जन है।

साध्वीश्री शुभम्जी मानवकल्याण के कार्य, जीवन भर करती रही और इस संसार से विदा लेते समय भी एक जबरदस्त प्रेरणा इस कार्य को करने की देती गयी। श्री अभय भैया ने उनके जीवन से प्रेरणा लेकर उन्हें शब्दों की नहीं किन्तु डायग्नोस्टिक सेन्टर जैसे सेवाकार्य के रूप में श्रद्धांजलि देने की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भावना व्यक्त की है। इससे बड़ी श्रद्धांजलि और क्या होगी? हम सब अभय भैया के इस सुझाव के प्रति अत्यन्त आभारी हैं।

ज़ूम में उपस्थित हजारों लोग एवं यहाँ प्रत्यक्ष उपस्थित नालन्दा जिले के सब लोग- बौद्ध भिक्षु, ब्रह्मकुमारी और सब धर्म सम्प्रदाय एवं सामान्यजन सभी अभय भैया को उनके इस सुझाव के लिए धन्यवाद दे रहे हैं।

अभय भैया की इस भावना को सन्मान देते हुए देश-विदेश के अनेक लोगों ने सहयोग देने का आश्वासन दिया है।

वीरायतन बिहार में है जहाँ जैन समाज के बहुत कम लोग हैं। 1970 में वीरायतन की स्थापना हुई और 1973 में 18 जून से काम प्रारम्भ हुआ। मुझे बड़ा समाधान है कि अनेकानेक लोग वीरायतन से जुड़े हैं। अपनी भावना से उन्होंने वीरायतन को सपोर्ट दिया है। श्री श्रवण कुमार जी नालन्दा के विधायक हैं। वे वीरायतन की प्रत्येक प्रवृत्ति में अत्यन्त उत्साह से भाग लेते हैं। मैं उन्हें कहती हूँ कि यह उठा-पटकवाली राजनीति छोड़ दीजिए और वीरायतन से जुड़ जाईये, आईये और बिहार की जनता की सेवा कीजिए। यह सीधा-सीधा प्रभु का मार्ग है, मानव कल्याण ही स्व पर कल्याण का मार्ग है। इससे अच्छा मार्ग कोई हो नहीं सकता।

50 वर्षों से वीरायतन के प्रारम्भ से ही डॉ. फैज़ल और उनके पिताजी डॉ. ईसरी पूज्य गुरुदेव के परम भक्त रहे हैं वीरायतन में तब से उनकी सेवाएँ बराबर रही है। वीरायतन ने राजगीर के अधिकांश लोगों को अपने साथ जोड़ा है। डॉ. आलोक सिन्हा वीरायतन के परिवार के रूप में हैं। उनका सहयोग शब्दों से परे हैं। मैं आप लोगों को और खासकर श्रवण कुमारजी को कहना चाहती हूँ कि बाहर के लोग, देश-विदेश के लोग बिहार में कार्य करना चाहते हैं, आपको तो सहयोग देना ही चाहिए। सहयोग देकर जनता के साथ जुड़कर बिहार को इतना बड़ा बना दीजिए कि बिहार महावीर के युग का बिहार बन जाय। हमें बिहार को ऊपर लाने का प्रयत्न करना है।

शुभम्जी को अन्त:करण पूर्वक स्मरण करके उसे हमेशा-हमेशा के लिए अपनी भावनाओं में समा लेती हूँ। उसके सद्गुणों को हम अपने जीवन में उतारने की निरन्तर कोशिश करते रहेंगे।

खरतरगच्छाधिपति आचार्य जिनमणिप्रभसूरिश्वर जी

युवाचार्य श्री शुभम्जी के निर्वाण के समाचार से अपार पीड़ा हुई। बहुत छोटी उम्र में वे चले गये। शासन की बहुत बड़ी क्षति हुई।

राजगृही प्रतिष्ठा के अवसर पर उनका सरल सहज स्वभाव, आपके प्रति पूर्ण समर्पण, सत्कर्म के प्रति अपार निष्ठा का अनुभव हमने किया था। उनका व्यक्तित्व आंखों के आगे घूम रहा है। आपके लिए तो यह बहुत दर्द का विषय है। बचपन से वे आपके साथ रहीं। आपने उन्हें पूर्ण योग्य बनाया और वे हर समय योग्य प्रमाणित हुई। आपको क्या सान्त्वना दूँ। नियति के इस कर्म को कौन रोक सकता है? आयुष्य पूर्ण होने पर विदा होना ही पड़ता है। आप सभी धीरज धारण करें। आपने उन्हें माँ की तरह सम्हाला है। खूब धीरज रखें। अपना, अपने स्वास्थ्य का, निश्रावर्ती सभी का पूरा-पूरा ध्यान रखावें।

पूज्य मोरारी बापू

मुझे खबर मिली कि आपके आश्रय में रहकर जिन्होंने आपके संकेत एवं आदेशानुसार भगवान महावीर का विश्वोपयोगी संदेश अपने जीवन में उतारते हुए प्रचारित प्रसारित किया वे ऐसी पूजनीय साध्वी शुभम्जी 2 जनवरी को निर्वाण पद को प्राप्त हुई। माँ! आपके पास जब-जब आना हुआ मैंने साध्वीजी की समझ, सरलता, सहजता का अनुभव किया।

मैं आपको क्या ढाढस दूं, आप तो सबकी माँ हैं, इसलिए आपको ज्यादा पीड़ा होगी। और कुछ न कहते हुए, जो आपके आश्रय में सीख, करुणा और अहिंसा का संदेश आपकी छत्रछाया में सब साधक साध्वियों ने पाया है उसे अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार आचरण में लाने के काम में लगी रहे ऐसी अरिहन्त के चरणों में मेरी प्रार्थना है।

पूजनीय साध्वीजी के निर्वाण को मेरा प्रणाम और माँ आप आपकी तबीयत का ख्याल करियेगा और सबको ढाढस दीजियेगा। आप विदुषी हैं, अनुभवी हैं भगवान महावीर का दर्शन आपने पचाया है। इसलिए आपको हम कुछ कह नहीं सकते, हम तो बालक हैं।

इतनी उम्र में भी इतने विशाल फलक

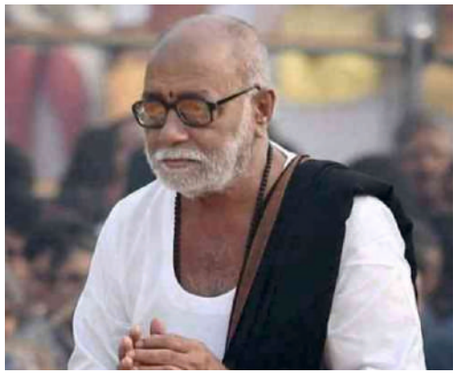

पर आप सेवा के कार्य कर रहे हैं जिसका मैं साक्षी हूँ। शुभम्जी आपके साथ अधिक समय तक रहती तो आपको बहुत बल मिलता। नियति ने जो निर्णय किया, उसे कौन बदल सकता है। मैं पूरे अन्त:करण के साथ पूजनीय साध्वी शुभम्जी के निर्वाण पर मेरी श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

श्री विक्रम भाई

श्री राज सौभाग सत्संग मंडल, सायला

आदरणीय आचार्यश्री ताई माँ, हम आपके कमलाचरण में नमन करते हैं और आपसे अनुरोध करते हैं कि कृपया हमारे हार्दिक वंदन को स्वीकार करें। दुख के इस क्षण में, यह आपकी आत्मापूर्ण उपस्थिति है जो पूरे वीरायतन परिवार को शांत और सांत्वना देगी।

कई गुणों का एक अवतार युवाचार्य साध्वी शुभमजी ने आपकी दिव्य चमक को प्रतिबिंबित किया। वह आपके रास्ते पर चल

पड़ी और न केवल अपने जीवन में, बल्कि कई लोगों के जीवन में वीतराग भगवान के मूल्यों को मजबूती से स्थापित किया। उनके आध्यात्मिक स्पर्श और निस्वार्थ प्रेम ने विश्व स्तर पर कई आत्माओं को सच्चे मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी।

कई मायनों में, वह आपकी छाया थी। विनम्र और अति विद्वान- वे इतनी आसानी से जैन धर्म के सबसे कठिन पहलुओं को उजागर कर सकती थी। असाधारण स्मृति और गहरी अंतर्दृष्टि के साथ, वह सरल शब्दों में परम सत्य को प्रकट कर सकती एक विरल विदुषी थी।

सेवा में, उन्होंने खुद को बलिदान किया और शारीरिक या भावनात्मक रूप से पीड़ित असंख्य आत्माओं को स्वस्थ और निरोगी बनाया। अपना सारा जीवन, वह उन लोगों की बेहतरी के लिए जीती थी, जिन्हें उनकी देखभाल और प्यार की जरूरत थी। आपकी दिव्य शरण में, वह एक देवदूत बन गई। संपूर्ण जैन बिरादरी उनके गुणों को याद करेगी। आपकी दिव्य उपस्थिति के कारण हमें इस तरह के शून्य और खालीपन, जो वे छोड़ गई, उसे सहन करने में शक्ति मिलेगी। दिवंगत आत्मा को हमारा भावपूर्ण नमस्कार। नि:संदेह, आत्मिक जागृति में प्रतिष्ठित उनकी पवित्र आत्मा की मोक्ष यात्रा जल्द ही समाप्त होगी। परम पूज्य भाईश्री, पूज्य मीनलबेन और सभी मुमुक्षु की और से यह श्रद्धांजलि पत्र लिख रहा हूं।

डॉ. अभय फिरोदिया- अध्यक्ष, वीरायतन

इस सभा में हम युवाचार्य शुभम्जी महाराज ने जो आयुष्य सार्थक किया है उसके बारे में बात करने के लिए मिलें हैं। वीरायतन के तीन उद्देश्य हैं, साधना, शिक्षा और सेवा। मेरी दृष्टि में शुभम्जी महाराज हरदम साधना की प्रतीक रही हैं। उन्होंने आखरी साँस तक अपनी जो Qualities थी, जो एफेक्शन था, Simplicity थी, उसी Inspiration से वे जी है। अगर उनके जीवन का कोई संदेश है तो वह साधना का है। काफी सारे लोगों ने उनके गुणों के बारे में, उनके आयुष्य के बारे में कहा है और आगे कहेंगे। मैं उनके जीवन के संदेश के बारे में नहीं बोलूंगा। मुझे उनके जीवन का जो मैसेज है, जो संदेश है वो दिखता है। उनके चले जाने में भी हमारे लिए एक सबक है, एक संदेश है ऐसा मैं मानता हूँ। उनकी अकाल मृत्यु क्यों हुई? वो हेल्दी थे, सशक्त थे। उनको वर्षों तक जीना था। परन्तु वे नहीं जी पाए। उनका शरीर एक बीमारी से ग्रस्त हो गया और उसमें

से उनका शरीर उभर नहीं पाया। यह क्यों हुआ? राजगीर एक ऐसी जगह है जहाँ पर श्रद्धा, भावना, इतिहास, पुण्याई बहुत है, परन्तु आधुनिक साधनों का बहुत बड़ा अभाव है। तीस वर्ष पूर्व जब यहाँ पर आई हॉस्पिटल श्री ताई महाराज ने बनाया तो किसी को इस बात का कॉन्फिडेंस नहीं था कि यह हॉस्पिटल बहुत अच्छी तरह से चलेगा, लाखों-लाखों लोगों की सेवा करेगा और इस शहर के लिए यहाँ की जनता के लिए एक वरदान होगा। आज इस पूरे इलाके में नालंदा जिले में किसी भी प्रकार की आधुनिक वैद्यकीय सुविधा नहीं है। मुझे ऐसा लगता है कि वीरायतन का जो सेवा का कार्य है उसके लिए शुभम् जी महाराज का यह संदेश है कि इस सेवा के कार्य में हम इस कमी को पूरा करने के लिए कुछ करें। अगर हम इस बात को आगे बढ़ाना चाहते हैं और मैं समझता हूँ कि वीरायतन सक्षमता से इस बारे में आगे बढ़ेगा। हमें यहाँ पर एक Modern Diagnostic Center बनाना चाहिए, जिसके अंदर MRI Radiology, Pathology, Moderate Cardiology बगैरह सब प्रकार की सुविधा रहें। मैंने अपने कुछ डॉक्टर मित्रों से बात की है और मुझे ऐसा लगता है कि हम यहाँ पर इस प्रकार का Modern Diagnostic Center बना पायेंगे। उसमें करीबन 15 करोड़ रुपये का खर्चा आयेगा। 2 मिलियन डॉलर्स में हम सब यहाँ प्रोवाइड कर सकते हैं। एक अच्छी छोटी-सी Air-Conditional Building और सैकड़ों लोगों को रोज का Diagnose करने के लिए हम यहाँ सक्षम केन्द्र बना सकते हैं। यह

आदरणीय बाबा के साथ वीरायतन की प्रवृत्तियों का अवलोकन करते हुए...!

वीरायतन के अध्यक्ष श्री अभय फिरोदिया जी के साथ युवाचार्य श्री शुभम्जी

जो डायग्नोस्टिक सेन्टर होगा वह आज के Modern Tele Medicines पर होगा, मतलब व्यक्ति को वहाँ चेक किया जायेगा, उसका MRI होगा, उसका ब्लड और बाकी Examinations वहाँ होंगे पर उसके जो Result हैं वे Internet से एक Special Center में जायेंगे और तत्काल आयेंगे। चाहे वह सेन्टर पूना या बॉम्बे में बनें। उस सेन्टर में सात-आठ सक्षम डॉक्टर्स होंगे, वे डॉ. किसी Radiology या Pathology Center में रहते हैं और उनकी Availability कोई Problematic चीज नहीं है। ये हम कर सकते हैं। वो डॉक्टर निदान करके जितना जल्दी हो सके अपना opinion दे सकेंगे। जिस व्यक्ति की Examination हुई है, उसे तुरंत रिपोर्ट मिल सकेगी। यह जो Center बनेगा उसका कनेक्शन हिन्दुस्तान भर के, दुनिया भर के डॉक्टरों के साथ हो सकता है। कोई Complicated चीज जो रिपोर्ट देखने से डॉक्टर को लगे कि बड़े Expert को बताना चाहिये तो वह तुरंत डॉक्टर से चाहे वह डॉक्टर अमेरिका में हो या, बॉम्बे में या दिल्ली में हो उसे रिपोर्ट पहुँचाया जा सकता है और उसका ओपिनियन भी लिया जा सकता है। यह बात आज की टेक्नोलॉजी की वजह से संभव है। जो खर्चा Center को चलाने में आयेगा वह Manageable होगा। वीरायतन वह खर्चा कैसे मैनेज करना, यह जानता है। आज जो आई हॉस्पिटल चल रहा है वह स्वयं पूर्ण है। अपने बलबूते पर खड़ा है। जो श्रद्धालु लोग मदद करते हैं वह मदद लेने में कोई हिचक नहीं है, इस मदद का स्वागत है। पर हॉस्पिटल अपने पैरों पर खड़ा रहना पसंद करता है और खड़ा है। मैं मानता हूँ कि यह Diagnostic Center

भी इसी तरह खड़ा हो सकता है। इसके लिए बहुत ज्यादा समय की भी जरूरत नहीं है यह साल भर के अंदर हो सकता है। मैं श्री ताई महाराज से यह प्रार्थना करना चाहता हूँ कि हमलोग इस प्रकार का एक सेन्टर बनाने का सोचें और उनकी आज्ञा हो तो तीन-चार सीनियर मेम्बर्स वीरायतन के हैं हम बैठकर इस बारे में आगे क्या करना इसका प्लान बना सकते हैं और सालभर के अंदर यह कार्यान्वित हो सकता है। अगर हम यह कर पायें तो शुभम् जी महाराज के आखिरी दिनों में जो दिक्कतें आई वे दिक्कतें यहाँ की जनता को नहीं होगी। क्योंकि यह दरवाजा हरेक के लिए खुला रहेगा। सब के लिए यह सुविधा उपलब्ध होगी। और बहुत बड़ी सेवा मानवजाति की इस सेन्टर द्वारा हो सकती है। इस सभा में मुझे यह कहना है कि शुभम्जी महाराज के आयुष्य से हमने बहुत सीखा है, पर उनके चले जाने के जो कारण थे, जो घटनाएँ घटी उसपर से भी कुछ सीखें। वह मानवजाति के कल्याण के लिए होगा। मैं मेरी तरफ से शुभम् जी महाराज को श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ। उन्होंने मुझे बहुत स्नेह दिया। वे युवाचार्य घोषित होने के बाद कुछ महीनों तक पूना में रही। संस्था का कार्यभार कैसे संभाला जाए। उसके बारे में थोड़ा-सा प्रशिक्षण भी मैंने Organized किया था और मुझे ऐसा लगा कि कितनी सज्जन, सरल मन की यह व्यक्ति है। हर चीज जो उनके सामने आती है वह निरपेक्षता से देखती है और सीखने का प्रयत्न करती है। उनके humble और simple nature से जितने भी लोग उनसे मिले, वे सब प्रभावित हुये। मुझे बहुत खुशी है कि उनके आयुष्य में मुझे भी उनसे मिलने का, बात

अधिकांश जीवन ग्रन्थों के बीच में,
शेष जीवन ज्ञान बांटने में....!

करने का, सीखने का अवसर मिला मैं उनको श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

श्रमणी प्रतिभा प्रज्ञा-
जैन विश्व भारती, लंदन

कितना कठिन होता है अपनी शिष्या को संथारा देना! अध्यात्म मार्ग को सामने रखकर आपने वह कठिन कार्य किया है। आपको भावपूर्ण नमन।

श्रद्धांजलि सभी देते हैं लेकिन मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि वीरायतन के अध्यक्ष श्री फिरोदियाजी ने जो कार्यांजलि की बात कही वह केवल जैन समाज के लिए ही नहीं मानवमात्र के लिए है यह भी एक सेवा की दिशा में उठता हुआ सशक्त कदम होगा। Detroit प्रतिष्ठा में मुझे लगभग एक सप्ताह तक युवाचार्य शुभम्जी के साथ रहने का अवसर मिला। उनका Dedication, उनका साधर्मिक वात्सल्य, उनकी वह मधुरता मैं भूल नहीं सकती हूँ।

तनसुख राज डागा- मानदमंत्री वीरायतन

परम विदुषी युवाचार्य साध्वी श्री शुभम्जी महाराज के अकस्मात निर्वाण से वीरायतन की ही नहीं बल्कि पूरे जैन समाज की महान क्षति हुई है। इसकी पूर्ति भविष्य में होनी असम्भव है। करीब तीन दशक तक वीरायतन की विचारधारा को यू.एस.ए. व दुनिया के अनेक देशों में उन्होंने पहुँचाया। वे एक महान सन्त थे। मुझे चार दशक तक उनके सान्निध्य में रहने का अवसर मिला। पूज्य बाई महाराज की परंपरा को कायम करते हुए नेत्र ज्योति सेवा मंदिरम् में वे मरीजों को बराबर नैतिक शिक्षा का पाठ पढ़ाते रहे।

जब कच्छ में भूकम्प आया तब आचार्यश्री ताई माँ की आज्ञा से एक सेवा परायण टीम को लेकर वे बिहार से कच्छ पधारी और वहाँ कई महीनों तक आचार्यश्री माँ के साथ भूकम्प पीड़ितों की सेवा करती रही। शुभम्जी महाराज के चरणों में भावपूर्ण श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ। ऐसी साध्वी अति विरल होती है। बच्चों जैसा उनका सरल,

कोमल मन था। जिनसे भी मिली उन्हें अपना बनाया। इन दो दिनों में सौ से अधिक फोन सारी दुनिया से उनके लिए आये। सबका यही दु:खद प्रश्न था- "ऐसा क्यों हुआ?" बस! प्रकृति को यह मंजुर था। पुन: पुन: उनके चरणों में श्रद्धासुमन अर्पण करता हूँ।

श्रवण कुमारजी (एम. एल. ए.)- नालंदा-बिहार

आज हम सब बहुत ही मर्माहत है। हमारे बीच से युवाचार्य साध्वी शुभम्जी का अचानक चला जाना, हम सब के लिए दु:खदायी है। उन्होंने वीरायतन में रहकर जो सेवाकार्य किया, वह अपने लिए नहीं किया लेकिन उनलोगों के लिए किया जिनका कोई सहारा नहीं था, खास करके उनलोगों के लिए किया जिनके बारे में बहुत कम लोग सोचते हैं। मैं समझता हूँ शुभम्जी तब तक लोगों के हृदय में स्मृति रुप में रहेंगी जब तक सूरज और चांद रहेगा। उनका नाम अमर रहेगा।

साध्वी श्री प्रीति सुधाजी- पूना

पूना में जब शुभम्जी के निर्वाण के समाचार वायरल हुए तो सुनकर हम अवाक् खड़े के खड़े रह गये। विश्वास न हुआ, लेकिन करना पड़ा विश्वास।

"दूर न हो कभी कोई, वह उपाय है कौन?
यही प्रश्न है विश्व में, यहाँ विश्व है मौन।।"

वीरायतन परिवार की रीढ़ की हड्डी (Back Bone) थी साध्वीश्री शुभम्जी। न जाने वीरायतन के कितने-कितने कार्य उन्होंने सम्पन्न किये। ताई माँ के निर्देशन में उनके एक के बाद एक कार्य होते रहे हैं। देश में ही नहीं विदेशों में भी। वे Straight Forward थी। ताई महाराज के आगे उनके लिए कोई भी बड़ा नहीं था। ताई महाराज की भावना को पूरा करना एकमात्र उनका यही ध्येय था और उसकी पूर्ति हेतु जितनी मेहनत, जितना श्रम करना हो उन्होंने किया। ऐसा समर्पित व्यक्तित्व था उनका।

ऐसा हीरा जब गायब हो जाता है तो हृदय आहत हो ही जाता है। वीरायतन परिवार के इस गहन दु:ख के साथ हम भी दु:खी है। हम वीरायतन राजगीर में दस माह रहे हैं। हमने सबके स्वभाव को जाना है। शुभम्जी की मधुरता ने हमें गहराई तक छुआ है। हम उन्हें

कभी भूल नहीं पायेंगे।

हमारे ताई महाराज ने तो अपना खून-पसीना एक करके एक अद्भुत इतिहास रचा है। जो बेजोड़ है। उनके सहयोग में सदैव तत्पर हमारे अभयबाबु फिरोदिया और ताई माँ इंजन है जिसके पीछे सारे डिब्बे चलते हैं। जंगल में मंगल किया है। प्रभु उन्हें इस दु:खद प्रसंग को सहने की शक्ति प्रदान करें। इसी मंगलकामना में...!

मनोज डागा- यू.एस.ए.

Sadhvi Shri Shubhamji had a deep profound impact on everybody's life. जिन-जिन के जीवन को उन्होंने छुआ है उन सबके जीवन को उन्होंने बहुत ही प्रभावित किया है। मैंने तो वीरायतन की साध्वियों के साथ बचपन में खेलते-खेलते संस्कार पाये हैं। बचपन से ही मैं उन्हें जानता रहा हूँ। मेरे जीवन के सभी प्रसंगों में वे हमारे साथ रही हैं। मुझे याद है कि जब मेरी शादी हुई और पहली बार अठाई तप किया तो कलकत्ता के कमाणी जैन भवन में वे हर रोज मुझे भक्तामर स्तोत्र का पाठ सिखाती थी।

आज अमेरिका में पिछले दो दिन से मेरे पास इतने सारे फोन आ रहे हैं और सबका एक Uniform message है कि किस तरह शुभम्जी ने हर एक की Life को Impact किया है। इतनी सुन्दर, इतनी सरल बहुत ही Motivational Life रही है उनकी। हमारी सबसे बड़ी श्रद्धांजलि शुभम्जी के लिए यह होगी कि अगर हम उनके जीवन की सरलता से कुछ सीख सके। आज श्री अभय फिरोदिया जी अंकल ने बहुत ही सुन्दर सोच रखी है कि वीरायतन में एक Diagnostic Center खोला जाय। उसे बनाने में हम सब सम्पूर्ण विश्व में से

2001 के भयंकर भूकंप के समय कच्छ के लोगों की सहायता के लिए साध्वी शुभम्जी निरंतर प्रयत्नशील रही।

अपनी लेखनी से हजारों पृष्ठों पर पूज्य गुरुदेव एवं पूज्य ताई माँ के प्रवचन उतार कर साहित्य जगत को अनुपम देन प्रदान की है- साध्वी शुभम्जी ने।

जितना ज्यादा से ज्यादा सहयोग कर सके, तन-मन-धन से तो वह शुभम्जी के लिए बहुत अच्छी श्रद्धांजलि होगी।

Sucheta Doshi-
Secretary, Veerayatan, Palitana

Whilst a lot has already been said, no attempt to describe Shubhamji Maharaj's personna will be adequate. She was an experience. An epitome of religious practice. We, Ritaben Shah of UK and myself, are indeed fortunate and truly blessed to have had the opportunity to work with her, under the auspices of Veerayatan Global, to provide online Swadhyaya classes a few years ago, when zoom had not become a household feature.

For Shubhamji Maharaj swadhyaya was of utmost importance, the way to bring contemplation and awareness in our lives. She was willing to teach at any time, whether there was one student or ten and gave us numerous, untiring hours of learning.

In particular, she helped me proof read the gujrati reprint of Gurudev's Adhyatma Pravachan. The vastness and depth of her knowledge, not only of the Jain Shashtras but also of Vedic and Buddhist scriptures, was indeed commendable. Despite her immense knowledge, she was extremely simple and humble, approachable at all times.

Undemanding, maintaining "maun" for the better part, a soul that has not hurt anyone and left us richer with the example of the way she lived her life, embodying the Jain principles of keeping control on ones kasayas. She was ever smiling and happy. As Tai Ma has often said that a dharmic person will always be "prasanna" ...

Shubhamji Maharaj was a true Sadhvi, who practised dharma continually through her life, enriching all

around her with her calm demeanour. Being in her presence was like experiencing the gentle pure morning breeze .... Her life and its beautiful aroma will be treasured always ....a soul that we all celebrate and will miss deeply, daily and forever...an example to follow.

Piyoosh M. Baldota- Banglore

Sadhavi Shubham-ji was the happiest soul in life as she was a universal giver and not a receiver. Whether it was adopting Diksha, or being a child with children and showering immense love, feeding parrots and sparrows, or taking care of Tai Ma's health, medicines and food, or giving online education through webinars and so on. She has been a most pious person who would neither entertain gossips nor hurt anyone and was never proud of her knowledge. She was a marasab in the true sense who didn't want anything commercial or materialistic from this world not even the "Yuva Charya" post.

It's a great loss for all of us, inspite of all the efforts by you and all the members of the Veerayatan family to revive her... she has departed with a simple smile behind. I am proud of my Masi and her legacy she has left behind.

Natasha and Payal, USA

Sadhvi Shri Shubham ji Marasab- Your life was full of loving deeds. You were forever so thoughtful and sensitive of our innumerable needs. I will always love my nani-marasaheb and cherish the countless memories we created together. Like and ever flowing fountain of unconditional love the scintillating fragrance of your beautiful, innocent smile will linger in my heart forever. Your warm bear hugs and affectionate words I shall cherish forever. You seem to have a garden of Love growing in your heart, not only for us but also for birds and animals! We missed the sweet fragrance of the flowers from that garden. We are the

संबंध कहीं और पर संग कहीं और ...

keepers of all those memories. There was a magic in your touch and a sunshine in your smile. There is boundless love in everything you did and that made our lives worthwhile. We miss those who have departed but we feel your presence in our hearts forever like a divine blessing. So blessed to have had you as our family.

Navin Sanghrajka
Chairperson, Veerayatan, UK

The Trustees, Committee Members, SCVP Teachers and all the members of Veerayatan UK would like to extend their deepest condolences to everyone at Veerayatan for the sudden loss of Pujya Yuvacharya Shri Shubhamji Maharaj. The UK Jain community feel deeply sad for the loss of Pujya Shubhamji. She was without any doubt a very special soul, pure and highly elevated. She first accompanied you to the UK in the late 1980s and then again in 1995 when she worked to help with the setting up of the Jain museum at Leicester Derasar, followed by further visits. Most recently she came to conduct Paryushan in Northampton in 2017 which included teaching sessions in London.

Pujya Shubhamji had the rare quality of making each person who came in contact with her feel loved, valued and special. This was because she was so humble, she respected and had time for each and every person and she treated everyone the same irrespective of age, status or creed. Her ever smiling and jovial nature made her see the wonder in all things in life and she made everyone around her happy as love and compassion was her nature.

We all noticed that she would see the goodness in everyone and everything, never judged anyone, appreciated life and really felt empathy with the pain and suffering of other living beings and would at every moment do all she can to help to reduce that pain. She truly had love for everyone.

Mukesh Turkhia
President, Veerayatan USA

Param Pujya Shubhamji Maharaj Sahab- A Karmyogi and a Gyanyogi in true sense, leaving behind legacy of over 50 years of selflessly imparting and contirbution to philosophy of Veerayatan that is Seva, Siksha and Sadhna. In last few days Veerayatan International Committee members received lots of emails and phone calls from all over the United States of America describing how much Subhamji Maharaj Saheb has contributed so may families in field of religion and Jain values. Veerayatan International U.S.A. will definitely undertake a leadership role starting a charitable activity which will highlight her legacy.

Bakul Bhai, Muscat

The entire Jain community stunned in learning that Shubhamji passed away two days before. She used to come for paryushan for number of years in Muscat to address the Jain Community. So many things have been said about her but there is never enough for a noble soul like Shubhamji. On behalf of Jain Sangh and on behalf entire community, I take this opportunity to express our sincere condolence. I am sure that such a noble soul will always rest in peace.

Sunderji M. Shah-
Veerayatan Kutch, President

A great loss to Veerayatan Sangh parivar. Sadhvi Shubhamji's huge contribution to our Mahavir Bhoomi Rajgir and to Veerayatan ideology with Acharyashriji's blessing and guidance. She will always be remembered and revered. Praying for her soul.

Jaina President- Maheshbhai Vadher, U.S.A. & Canada

Jain samaj of the U.S.A and Canada was shocked beyond belief, hearing the news of Yuvacharya Sadhvi Shubhamji's passing. Over the years Shubhamji visited most of the Jain centers and hundreds of homes. She may have left for heavenly abode but she will live in the heart's of thousands of her followers who benefitted from her teachings, wisdom and serenity. It was amazing how much she cared for the family she came in contact with and even the name and details of everyone in the family. She will be greatly missed. On behalf of hundred and fifty thousand in north America I send condolences to Veerayatan parivar.

Bharat Doshi- Veerayatan, Kenya

Acharyaji and the entire Sadhvi Sangh - please accept our most sincere condolences on the sad demise of Sadhvi

वीरायतन के प्रचार के लिए मोरारजी देसाई से मिली है
कुमारी शोभना, वीरायतन बालिका संघ के सदस्यों के साथ...!

Shubhamji Maharaj. It is indeed a great loss to the entire Veerayatan Community and we will miss her immensely. We pray to almighty that her soul rests in eternal peace.

नगीन भाई दोशी- सिंगापुर

वीरायतन परिवार ना एक आदर्श विद्वान साध्वीरत्न श्री शुभम्जी महाराज अल्पबिमारी मां आयुष्य पूर्ण करी स्वर्गवासी बनी गया, जानी ने अमो समग्र सिंगापुर जैन संघ ने दु:ख थयु। श्रद्धेय आचार्यश्री नी करुणापूर्ण दृष्टि छे- अमारा सिंगापुर मां पूज्य शुभम्जी महाराज साहेब ना ज्ञान नो, तेमनी विद्वत्ता नो अने तेमना सुन्दर प्रवचनों नु खुब सरस लाभ अमने मल्यु छे। तेओश्री खुब सरल, सात्विक, निखालस व्यक्तित्व ना धारक हता। संस्कृत, प्राकृत, इंगलिश, हिन्दी, गुजराती आदि भाषाओं ऊपर खुब सारु प्रभुत्व धरावता होवाथी भगवान महावीर नी वाणी ने खुबज सरस रीते तेओ समजावता हता। युवावर्ग तथा बालकों ने पण तेओ जैनीज्म सुन्दर रीते समजावता हता। तेओश्री नी सफल संयम जीवन यात्रा मां अचानक ज अशाता वेदनीय कर्म उदय मां आव्यु।

पूज्य आचार्यश्री अने समग्र वीरायतन परिवारे तेमने फरी निरोगी बनाववा घणा प्रयत्नों कर्या परन्तु आयुष्य पूर्ण थयुं। अमे तेमने भावभरी श्रद्धांजलि पाठवीये छीये।

योगेश दोशी- दुबई जैन संघ

दुबई वीरायतन और दुबई जैन संघ की ओर से युवाचार्य श्री शुभम्जी को श्रद्धांजलि अर्पण करते हैं। पूज्य गुरुदेव अमर मुनिजी महाराज और आचार्यश्री चन्दनाश्रीजी ताई माँ द्वारा संस्थापित सुन्दर बाग का एक पुष्प और वीरायतन परिवार तथा जैन समाज का सितारा आज अस्त हुआ है।

उनकी भावना और उनकी छवि सबके हृदय में बसी हुई है। मैं उनकी मधुर स्मृतियों को स्मरण करता हूँ और चरणों में श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

कवीन्द्र नाथ मोदी, नेपाल

युवाचार्य साध्वी श्री शुभम् जी के देवलोक गमन के समाचार से समस्त नेपाल के अनुयायी स्तब्ध रह गए है। वीरायतन परिवार ही नहीं अपितु मानव मात्र के लिए यह अपूरणीय क्षति हुई है। नेपाल को भी साध्वी श्री का अल्प किन्तु अमूल्य सान्निध्य प्राप्त हुआ था और वह समय हमारे लिए अविस्मरणीय समय है। वीरायतन नेपाल, साध्वी श्री की आत्मा अपने परम लक्ष्य को प्राप्त करें यही हार्दिक मंगल कामना व्यक्त करता है।

Shrimad Rajchandra Mission
Dharmpur

પૂજ્ય આચાર્યશ્રી,

યુવાવયથી સેવા, શિક્ષા અને સાધનાનાં સ્વપરકલ્યાણક્ષેત્રોમાં વિશિષ્ટ યોગદાન આપનાર શતાવધાની યુવાચાર્યા સાધ્વીશ્રી શુભમજી મહારાજે સંથારાપૂર્વક દેહત્યાગ કર્યો એના વૈરાગ્યજનક સમાચાર અત્રે પ્રાપ્ત થયા છે. પૂજ્ય સાધ્વીજીની ચિર વિદાયથી ન કેવળ વીરાયતનને, બલકે સમગ્ર જૈનસમાજને એક સાધકરત્નની ખોટ પડી છે.

જ્ઞાનાચરણીયનો અસાધારણ ક્ષયોપશમ છતાં અનાસક્તિ સાથે સ્નેહાળતાનો, શાંતતા સાથે પ્રસન્નતાનો, સરળતા સાથે સંચાલનસામર્થ્યનો સુંદર સુમેળ સાધનાર સાધ્વી શુભમજીને આપશ્રીએ સુચારુરૂપે યુવાચાર્યાની પદવીથી વિભૂષિત કર્યા હતા.

સ્વાધ્યાયશીલતા અને સાધનાપરાયણતાને કારણે દેશ-વિદેશમાં ચિરસ્મરણીય અને અનુમોદનીય ધર્મપ્રભાવના કરનાર પૂજ્ય સાધ્વીજી આપના શ્રીમુખેથી સંથારો પામી, પૂજ્ય સાધ્વીગણ તથા શ્રાવકસમાજની ઉપસ્થિતિમા આરાધનાસભર દેહોત્સર્ગ દ્વારા સાંપ્રત સમાજ માટે ધર્મપ્રીતિ તેમજ સાધનાનિષ્ઠાની મહદ પ્રેરણાસુગંધ મૂકી ગયા છે.

પરમકૃપાળુ પરમાત્માને પ્રાર્થના કરું છું કે સાધ્વીશ્રીએ આદરેલ આત્મકલ્યાણની અનુપમ યાત્રા પર તેમનો આત્મા ઉત્તરોત્તર પ્રગતિ સાધતો રહે અને શ્રી વીતરાગ દેવ-ગુરુ-ધર્મના શરણપસાયે શીઘ્રતાએ સિદ્ધપદે સુસ્થિત થાય.

ૐ શાંતિ:

(પૂજ્ય ગુરુદેવશ્રી રાકેશભાઈ) તા. ૦૩.૦૧.૨૦૨૧

पूज्य गुरुदेव श्री राकेश भाई के साथ युवाचार्य श्री शुभम् जी!

श्रद्धांजलि समाचार पत्रों में

देशभर के पत्रकारों ने श्रद्धांजलि के समाचार को प्रकाशित कर अपनी-अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। बिहार शरीफ, राजगीर ही नहीं पूना, जयपुर, मेरठ, आगरा आदि कई शहरों के वरीष्ठ पत्रकारों ने मुख्य पृष्ठ पर इसे स्थान दिया-

बिहार शरीफ- नालंदा 1. दैनिक जागरण, 2. दैनिक भास्कर, 3. प्रभात खबर, 4. हिन्दुस्तान, 5. राष्ट्रीय सहारा एवं अन्य 6. देव चेतना- राजस्थान और 7. दैनिक जलते दीप- पूना

युवाचार्य साध्वी श्री शुभमजी महाराज को श्रद्धांजलि

1

सभा में देश-विदेश के ये लोग हुए शामिल

युवाचार्य साध्वी श्री शुभम जी महाराज को दी गयी भावभीनी श्रद्धांजलि

3

अद्भुत व्यक्तित्व की स्वामी थी साध्वी शुभम जी, दी गई श्रद्धांजलि

2

सादगी और सौम्यता की प्रतीक थीं साध्वी शुभमजी

4

युवाचार्य शुभमजी महाराज को दी गई भावभीनी श्रद्धांजलि

5

वीरायतन युवाचार्य साध्वी श्री शुभमजी महाराज का देवलोकगमन

6

वीरायतन युवाचार्या साध्वी श्री शुभमजी म. सा. का संथारापूर्वक देवलोकगमन

7

"सौरभ" वीरायतन की

चुत्तर परिवार की नन्हीं परी ने किया बड़ा कमाल,
गुरु चरणों की चाहत बढ़ी उम्र थी सिर्फ दस साल।
माता धापीबाई एवं पिता संपतलालजी की राजदुलारी,
पुष्पाजी, महेन्द्रजी, चंद्रकांतजी की बहना थी प्यारी।।

छोटी उम्र में धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया शुरू,
पूज्य आचार्य चंदनाजी माताराम जैसे पाये सच्चे गुरु।
ठान लिया था दीक्षा लेकर जिन शासन की करूं सेवा,
गुरु चरणों में बैठकर आपने आगम का खाया मेवा।।

शुभ दिन आया दीक्षा का जो बने शोभा से शुभम्जी,
शांत स्वभाव, हंसमुख चेहरा, प्रतिभा में नहीं थी कमी जी।
दिन-दिन ख्याति पायी गुरुणी माँ से आशीष मिला,
दीक्षा ग्रहण से महाव्रतधारी का बिलकुल यौवन खिला।।

सेवा, साधना, शिक्षा का हमेशा किया प्रचार,
भगवान महावीर के सिद्धांत भी पहुंचाये समुंदर पार।
पक्षियों की भाषा समझती थी आपको आते थे आपके पास,
निर्भय होकर दाना चुगते थे आपसे जुड़ी थी रास।।

ज्ञानी, ध्यानी आपश्री थे आगम के विद्वान,
मातारामजी ने चद्दर ओढ़ा के दिया युवाचार्य सम्मान।
देश-विदेश में प्रवचन देकर वीरायतन का बढ़ाया मान,
भक्तगण सारे दिल से करते थे आपका गौरव गुणगान।।

चलते रहे आप यूं आगे बढ़ता गया कारवां,
बातें सबसे मीठी करते थे मिलती थी जैसे दवा।
एक दिन मिले हमें समाचार तबीयत हुई नासाज,
ठीक होने का ढूंढने लगे हम भी कोई इलाज।।

वीरायतन से पूना पधारे दवा का सिलसिला हुआ जारी,
आपश्री ने भी दर्द सहने की हृदय से की तैयारी।
श्रुतिजी महाराज साहब ने सेवा करके निभाया अपना फर्ज,
आपश्री को लगता था कैसे उतारूं आपका कर्ज।।

आशा मामी भी साथ रहकर बने सपोर्ट सिस्टम,
धीर देते थे जब हमारी आँखें होती थी नम।
डॉ. मामा ने दवा बनकर किया मसीहा का काम,
ट्रान्सप्लान्ट के लिए पीयूष ने खुशी से दिया नाम।।

शिलापीजी महाराज साहब की चिंता बढ़ी पूना पधारे जरूर,
एवरी थींग इज वंडरफुल का आपश्री ने पकड़ा सुर।
दिन आया वो काला 2 जनवरी मिली दु:खद बात,
युवाचार्य शुभम्जी ने छोड़ा हम सबका साथ।।

नेत्रदान से कोई देख सकेगा हुआ अनोखा काम,
युगों युगों तक अमर रहेगा शुभम्जी आपका नाम।
अंत में भगवान से करते हैं दिल से इक फरियाद,
किसी भी रूप में वापस भेजो हमारे शुभम्जी को आप।।

–सौ. निरंजना जैन,
चुत्तर परिवार

अमेरिका में श्रद्धांजलि सभा

– साध्वी शाश्वत

युवाचार्य श्री शुभम्जी के निर्वाण पर जैन सेन्टर ऑफ नार्थ कैलिफोर्निया (Jain Center of Northern California), जैन सेन्टर ऑफ सदर्न कैलिफोर्निया (Jain Center of Southern California), जैन सेन्टर ऑफ सेक्रामेन्टो (Jain Center of Greater Sacramento) तथा जैन सेन्टर ऑफ सेनडियागो (Jain Center of Sandiego) के संयुक्त प्रयास से दिनांक–10/01/2021 प्रात: 7:30 बजे अमेरिका में एक भावपूर्ण श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई, जिसमें पूरे अमेरिका से हजारों श्रद्धालु सम्मिलित हुये।

वीरायतन यू.एस.ए. के सदस्य श्री योगेश बाफना जी ने पूज्य ताई माँ का परिचय देकर उन्हें अपने भावोद्गार व्यक्त करने के लिए निवेदन किया। पूज्य ताई माँ ने सजल नेत्रों से शुभम् जी को स्मरण करते हुए कहा कि युवाचार्य शुभम्जी ने पूज्य गुरुदेव के प्रवचनों के हजारों पृष्ठ लिखकर जैन समाज और साहित्य जगत् की जो अनमोल सेवा की है, वह मानवजाति के कल्याण के लिए हमेशा उपयोगी रहेगी।

डॉ. जयेश शाह– अध्यक्ष J.C.S.C; श्री वीरेन शाह– अध्यक्ष J.C.S.C; श्री जगदीश शाह– अध्यक्ष J.C.G.C. तथा श्री रोहक वोरा–

गांव के बच्चे कह रहे हैं– 'शुभम् माताजी, हमें हे प्रभु वीर प्रार्थना सिखाते थे, नवकार मंत्र सिखाते थे। अब हमें कौन सिखायेगा?'

J.S.S.D. अध्यक्ष, श्री प्रेम जैन, श्री मुकेश तुरखिया, वीरायतन यू.एस.ए.- अध्यक्ष, श्री जैनेश भाई मेहता (ह्यूस्टन), श्री गिरीश शाह, श्रीमति प्रभा गोलिया (न्यूयॉर्क), मनोज डागा, मिस्टी शाह (न्यूयॉर्क), वीरायतन के अनन्य भक्त श्री सुभाष भाई खारा, डॉ. प्रवीण जैन, वीरायतन के अनन्य सहयोगी, श्री अशोक दोमडिया ने हृदय स्पर्शी भाव प्रस्तुत किए। साध्वी संघमित्राजी एवं मिनल बेन गाँधी ने अंतस् भावों को सुन्दर स्वर में पिरो कर प्रस्तुत किया। दर्शना बहेन (Sandiego) ने आनंदघन की रचना पर भावपूर्ण प्रस्तुति की तथा श्री शुभम्जी महाराज के जीवन पर किरीट भाई भावेशी द्वारा स्तवन सुनकर सभी की आंखें भीनी हो गई।

युवाचार्य शुभम्जी ने 20 वर्षों तक निरंतर अमेरिका का प्रवास किया। सैकड़ों परिवार उनकी उपस्थिति, ज्ञान तथा वात्सल्य से लाभान्वित हुए। उनका असमय जाना, वहां उनसे जुड़े परिवारों के लिए अत्यंत हृदय विदारक रहा और इसलिए बड़ी संख्या में श्रद्धांजलि सभा में जुड़कर और भी कई विशिष्ट व्यक्तियों ने अपने भाव अभिव्यक्त किए जो जैन सेन्टर ऑफ सदर्न कैलिफोर्निया के Youtube चैनल पर है, पाठक अपनी सुविधानुसार अमेरिका में हुई इस श्रद्धांजलि सभा को देख और सुन सकेंगे....

राष्ट्रपति बनने के कुछ दिन पूर्व

रामनाथ कोविंदजी और उनकी पत्नी को साध्वी शुभम्जी ने श्री ब्राह्मी कला मंदिरम् बताया था और विशेष वार्तालाप के लिए श्री ताई माँ के पास....

पत्रों में श्रद्धांजलि

जानते है कि जीवन का दूसरा छोर मृत्यु है! और यह भी जानते हैं कि देह नश्वर है कभी भी किसी भी समय शरीर विदा हो सकता है फिर भी असमय में प्रियजन का इस तरह से बिछुड़ जाना असह्य हो जाता है। युवाचार्य श्री शुभम्जी की अकस्मात विदाई को न मन मानने को तैयार होता है और न हृदय ही स्वीकार कर पाता है। ऐसे मुश्किल समय में आत्मीय लोगों की सद्भावनाएँ औषधि का काम करती है। प्रस्तुत है श्री अमर भारती के प्रिय पाठकों के लिए भी इस दुःखद वेला में यह औषधि। देश-विदेश से लगातार फोन, व्हाट्सेप एवं पत्र द्वारा आत्मीयजन सद्भावनाएँ प्रेषित कर रहे हैं- उनकी भावनाओं का सम्मान करते हुए हम कुछ पत्र तथा व्हाट्सेप संदेश पाठकों के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं :-

पूज्य तपस्वीश्री जगजीवनजी महाराज चक्ष चिकित्सालय, पेटरबार, बोकारो

पूज्य तपस्वी श्री जगजीवनजी महाराज साहब चक्षु चिकित्सालय पेटरबार स्थित गोंडलगच्छ शिरोमणी पूज्य गुरुदेव श्री जयंत मुनिजी महाराज साहब के आज्ञानुवर्तिनी साध्वीरत्न गीतधरा पूज्य बा. ब्र. दर्शनाजी महाराज साहब ठा. द्वय आपको सादर वंदन

करते हैं।

आज सुबह-सुबह ही साध्वीरत्न, परमविदुषी, शतावधानी एवं दृढ़ संकल्पी श्री शुभमजी महाराज साहब के असामयिक कालधर्म का समाचार सुनकर हमें गहरा आघात हुआ है। शुभम्जी महाराज की कमी वीरायतन परिवार को खलेगी ही साथ ही साथ पूरे जैन समाज को भी उनकी कमी सदैव खलती रहेगी।

हमारे यहाँ विराजित साध्वीजी एवं संस्था के सभी ट्रस्टीगण पूज्य शुभमजी महाराज साहब के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

साध्वी शाश्वत

स्मितपूर्ण चेहरा, मधुर रस से पूर्ण गंभीर अर्थसभर वाणी के स्वामी युवाचार्य श्री शुभम्जी महाराज। श्रद्धेय आचार्यश्री चन्दनाजी के ज्ञान एवं प्रेमपूर्ण संस्कारों से सिंचित इस पुष्प ने इस पृथ्वी से विदाय ली, परंतु उसकी सुवास हजारों हृदय में महक रही है। श्री शुभम्जी महाराज ने अपना सम्पूर्ण जीवन अपने गुरु पूज्य ताई माँ और श्री महावीर स्वामी को समर्पित किया और जीवन के प्रत्येक क्षण अपनी वाणी, व्यवहार और विचार से उन्हीं की सुगंध को फैलाया। जैसे फूल स्वयं को मिटा कर भी हमें चिर काल तक अपनी सुगंध अत्तर के रूप में दे जाता है, वैसे ही शुभम्जी महाराज ने स्वयं को विलीन करके हजारों जीवन में धर्म एवं अध्यात्म की सुवास सुरक्षित की है।

आपका जीवन हम सब के लिए आदर्श है। हमारी आपके चरणों में अर्पित श्रद्धांजलि तभी सार्थक होगी जब हम आपके गुणों को, आपके कार्यों को आपके विचारों को हमारे जीवन का मंत्र बना लें। आपने जीवन को, धर्म को न केवल पराकाष्ठा से जिया परंतु आपने हजारों को जीना सिखाया। माँ शरीर बनाती है और जीवन देती है, परंतु आप हजारों की परम माँ हैं जिसने आत्मा का ज्ञान देकर, धर्म का ज्ञान देकर अध्यात्म जीवन दिया जो सही मायने में जिन्दगी है।

हजारों-हजार लोगों के जीवन में अपनी मधुर वाणी से ज्ञान का दीप प्रज्वलित करने वाले आप जैसे महान आत्मा की क्षति कभी पूरी नहीं हो सकेगी परंतु आपके गुणों को जीवन में अंगीकार करने के संकल्प के साथ आपके चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित है।

साध्वीश्री हीराबाई महासती जी- गोंडल

वीरायतन परिवारना तेजस्वी होनहार विदुषी साध्वीरत्न युवाचार्य श्री शुभम्जी बहु

प्रत्येक बात को जानने की उत्सुकता और जानने के बाद खुशी, यह शुभम्जी के स्वभाव की खूबसूरती थी।

ज अल्प बीमारी मां आपणने सहुने छोड़ी स्वर्गवासी बनी गया। जाणी अमो सहुने खूब ज दु:ख थयुं। अमोने तो श्री शुभम्जी नी नातंदुरस्त तबीयतनी पण खबर न हती। आपणा श्री मेहुलभाई दामाणी द्वारा जाण्युं अने त्यार बाद श्री मनस्वीजी पासेथी समाचार जाण्या। गुरुणीमैया ने पण खूब ज दु:ख थयुं। आटली नानी, आवी सरल, सात्विक प्रेमाल सहुना हृदयमां स्थान पामेला आपणा व्हाला साध्वीजी आम अचानक आवी चिर विदाय लई ले अे केटलु आघात जनक बनी जाय, अे तो समझी शकाय छे। परंतु..... आयुष्य पूर्ण थये आपणुं कइ ज चालतु नथी।

श्री शुभम्जी खूब ज गुणीयल विदुषी, समर्पित साध्वीजी हता। तेओश्रीअे सर्व गुरुणीना हृदय मां तो स्थान बनाव्युं परंतु सर्व गुरु बहनों अने गुरुकुलमां अग्रिमता प्राप्त करी। तेओअे पोताना अपार ज्ञाननो लाभ खूब सरस रीते घणा भाविकोने आप्यो छे। संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं पर नु प्रभुत्व साथे-साथे अवधाननी तीव्र बुद्धि क्षमता पण धरावता हता। गगन धरा सूरज अने सर्व मानवजात ने अखूट उर्जा लखलूट प्रेम आपी, तेमनी महानतामां वधारों करे छे। तेज रीते आपणा शुभम्जीअे पण पोताना सेवायज्ञनी ज्योतिने उजागर करी मानव सेवाना मशालची बन्या छे। मस्कतमां पण तेओअे सरस लाभ आप्यो। आदर्श साध्वीरत्न बनी स्वयं नुं जीवन तो सफल बनाव्युं ज साथे-साथे अनेक भव्य आत्माओने साधनामां जोड़्या अने सफल बनाव्या।

गुणोथी सभर आवा साध्वीजी नी विदाई थी आप सहुने पण दु:ख थाय ज। श्री ताई महाराज ने पण आघात लागे ज परंतु आप सहु खूब ज समझु छो। प्रभु महावीरना आगम वचनों ने आत्मसात कर्या छे। तेथी विशेष शु लखवुं? बधा खूब हिंमतमां रहेजो। आपणे गौरव लई शकीअे अेवा साध्वीजीनी विदाय थी आपणे आपणा ज्ञानने पचाववानुं छे। स्वस्थ रहेजो। तबीयत नुं ध्यान राखजो। श्री शुभम्जी नो आत्मा परम शांति पामे। आप सहु

आघातमाथी मुक्त थइ आत्म साधनामा आगळ वधो अेज ली- साध्वी हीराबाई महासतीजी।

रिखब चन्द जैन- चेयरमैन, टी. टी. ग्रुप

महास्थविर श्रद्धेय युवाचार्य शुभम्जी महाराज की महान आत्मा ने 2 जनवरी 2021 को संलेखना पूर्वक देह विसर्जन किया। उनके संयममय जीवन के मनोरथ की परम प्राप्ति का पुण्य उन्होंने अर्जित किया।

उनकी आध्यात्मिकता, शास्त्रीय ज्ञान, धर्म प्रभावना का उत्साह, तपस्या एवं संयम सभी के लिए अनुकरणीय है। आचार्यश्री चन्दना जी महाराज के आशीर्वाद प्राप्त युवाचार्य शुभम्जी से वीरायतन संघ को बड़ी-बड़ी उम्मीदें थी, पर संयोग कुछ और ही रहा। उनकी महान आत्मा मोक्षगामी हो ऐसी जिनेश्वर भगवान से प्रार्थना है और हम सब उनको श्रद्धासुमन, भावांजलि अर्पित करते हैं।

वीरायतन मेरठ, जैन नगर

-कीमती लाल जैन (चेयरमैन), राजेन्द्र तनेजा (कोषाध्यक्ष), अश्विनी कुमार जैन (सचिव)

युवाचार्य साध्वीश्री शुभम्जी महाराज के संथारा पूर्वक देह विसर्जन का दुखद समाचार सुनकर मेरठ-वीरायतन के समस्त सदस्यों व शुभ चिंतकों द्वारा अपूर्णीय क्षति के लिए शोक प्रकट करने का सिलसिला जारी रहा..... आपको जैन धर्म व अन्य धर्मों के सिद्धांतों का गहन ज्ञान था, आपने अनेक ग्रन्थों का अध्ययन करके आत्मसात किया था। आपकी सरलता, शान्तभाव, प्रसन्न मुखमण्डल सबका मन मोह लेता था।

आपके सान्निध्य में अनेक आयोजन हुए जिनकी प्रेरणा पूरे विश्व में आपके शुभचिन्तकों के साथ, मेरठ-वीरायतन के हृदय में गुंजायमान है। आपके स्वभाव, विचार को और आध्यात्मिक तेज को भूल नहीं सकते। मेरठ-वीरायतन के समस्त सदस्य, शुभचिंतकों की ओर से परम पिता प्रभु से यह प्रार्थना करते हैं कि प्रभु उन्हें अपने चरण कमल में स्थान दें और हमें इस अमूल्य क्षति को सहने की शक्ति प्रदान करें।

श्री एस.एस. जैन समिति लोहामंडी, आगरा

परम पूज्य आचार्य माँ श्री चंदना श्री जी की सुयोग्य सुशिष्या युवाचार्य साध्वी श्री शुभम्जी महाराज का दिनांक 2 जनवरी, 2021 को पूना में देवलोक हो गया है। कुछ दिनों से अस्वस्थ चल रही थी एवं उनका पूना में उपचार चल रहा था। हमारे लोहामंडी श्री संघ की वीर प्रभु से यही प्रार्थना है कि उस दिवंगत महान आत्मा को वीर प्रभु शांति एवं

सद्गति प्रदान करें एवं इस दु:ख के वज्रपात को सहने की हम सबको एवं वीरायतन परिवार को शक्ति प्रदान करें। हमारा समस्त श्री संघ युवाचार्य साध्वी श्री शुभम् जी के पावन चरणों में अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

हंसा मालाणी, श्री सुमति महिला मण्डल, कामाणी जैन भवन-कलकत्ता

पूज्य साध्वीजी शुभम्जी के काल धर्म की बात सुनकर बहुत दु:ख हुआ- मन मानने को तैयार ही नहीं हो रहा है इतनी छोटी उम्र में यह कैसे हो गया, न कोई रोग, न कोई बीमारी की खबर, अचानक काल धर्म के समाचार सुनकर मन शून्य हो गया।

पूज्य शुभमजी शतावधानी, ज्ञानी और सेवाभावी थे। कलकत्ता में कामाणी जैन भवन में पूज्य सुमतिकुंवरजी महासतीजी की प्रेरणा से श्री सुमति महिला मंडल की स्थापना हुई। उन्होंने ज्ञान का जो छोटा-सा बीज बोया वह आज वट वृक्ष के रूप में उभर चुका है। पूज्य शुभम्जी कलकत्ता आती थी तब स्वाध्याय, ज्ञान, ध्यान का लाभ हम लोगों को मिलता रहता था। उनकी ख्याति देश-विदेश में फैली हुई है। उन्होंने विदेशों में भी अपने ज्ञान का लाभ सबको दिया है। उनका हंसमुख चेहरा नजर के सामने बार-बार आ जाता है। उन्होंने जैन समाज को अहिंसा, सत्य, संयम और सेवा का मार्ग दिखलाया है। हम उनके उपकारों को कभी भूल नहीं सकेंगे। आनंद के साथ और सत्य अहिंसा की राह पर चलने चलने वालों को मृत्यु का भय नहीं होता। आपने भी दो घंटे

पहले सब से खमत खामणा करके संथारा ग्रहण किया और समत्व भाव से दुनिया छोड़ दी। प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि आप शीघ्रातिशीघ्र अपनी मंजिल मोक्ष को प्राप्त करें। इसी भावांजलि के साथ।

चंदना स्वाध्याय मंदिर- कलकत्ता

युवाचार्य श्री शुभम्जी ने उपाध्याय श्री अमरमुनिजी महाराज एवं आचार्य श्री चंदनाश्रीजी महाराज के सान्निध्य में केवल जैन धर्म का अभ्यास ही नहीं किया बल्कि देश-विदेशों में, खास तौर पर अमेरिका में कई वर्षों तक जैन धर्म के सिद्धांतों को पहुँचाया। विद्या व्यसनी, विनयशील, शासन के प्रति समर्पित, अल्प एवं मृदुभाषी, अविचल संकल्प एवं सरल जीवन शैली के धनी थे, हमारे युवाचार्य शुभम्जी।

वीरायतन का अनमोल रत्न, हमारे युवाचार्य और जैसा नाम वैसे गुण के धनी, शुभम्जी अर्थात् निरंतर शुभ भावों में रहने वाले और प्रतिक्षण स्व-पर कल्याण के लिए जागृत थे; अत्यंत समाधि भाव से उन्होंने अपने देह का त्याग किया है। आज सम्पूर्ण जैन समाज और खास तौर पर चंदना स्वाध्याय मंदिर उनकी कमी महसूस कर रहा है। चंदना स्वाध्याय मंदिर के सभी शिक्षिकाओं एवं छात्रों की ओर से युवाचार्य शुभम्जी महाराज को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पण करते हैं।

श्री जैन श्वेताम्बर भंडार तीर्थ- राजगीर

पूज्य युवाचार्य साध्वीश्री शुभम्जी महाराज साहब के असामयिक संथारापूर्वक कालधर्म का समाचार सुनकर हमलोगों को गहरा दु:ख हुआ।

परम पूज्य आचार्य श्री चन्दनाजी महाराज साहब के पावन सान्निध्य में उन्होंने दीक्षा लेकर सम्पूर्ण मानव धर्म के कल्याण के साथ-साथ मूक बधिर एवं पशु-पक्षियों के जीवदया में अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। वीरायतन राजगीर के निर्माण में आपका अतुलनीय योगदान रहा है। वीरायतन के एक स्तंभ के रूप में आप थीं।

आपका स्वभाव अत्यंत सरल, मृदुभाषी तथा हंसमुख था। आपकी वाणी में काफी ओजस्विता थी। आपके पास जो भी जाते थे वो आपके सरल स्वभाव से अत्यंत ही प्रभावित हो जाते थे। धर्म के प्रचार-प्रसार तथा मानव जाति के कल्याण के उद्देश्य से आपने कई देशों की यात्राएँ भी की।

हमारी संस्था में समय-समय पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में आपकी उपस्थिति हमेशा हमें प्राप्त होती थी। आपके

प्रवचनों से हम सभी सदैव लाभान्वित होते थे।

आपके असामयिक कालधर्म से वीरायतन परिवार की जो अपूर्णनीय क्षति हुई है उसकी भरपाई करना संभव नहीं है। आपका मुस्कुराता चेहरा सदैव हमलोगों की स्मृति में अमर रहेगा। ईश्वर से हमलोगों की विनम्र प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को चिर शांति प्रदान करें। **– सुरेश चंद कोठारी (अध्यक्ष), रंजन कुमार जैन (मंत्री)**

विजय भंडारी-
अध्यक्ष, जैनसंघ पूना

पूज्य युवाचार्य शुभम्जी महाराज साहब के न रहने से जो क्षति पहुँची है वह सही मायने में समाज के लिए एक बहुत बड़ी क्षति है। एक लाफिंग बुद्धा जैसा उनका व्यक्तित्व था, जिन्होंने अपने जीवन काल में अनेकों के जीवन को परिवर्तित किया, अनेक लोगों की सोच को बदला। ताई माँ के हमेशा निकटवर्ती रहने के साथ-साथ समाज के अंदर उनका एक अलग-सा स्नेह बंधन था। पूना के अंदर वे ठीक एवं स्वस्थ होने के लिए आये लेकिन वे ठीक नहीं हो पाये। उनका स्वर्गवास हो गया। मैं पूना के सभी संघों एवं जीतो परिवार की तरफ से उन्हें विशेष रूप से श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ और उनके कार्य इसी तरह से चलते रहे, यह भावना रखता हूँ।

पदम सिंह राजकुमार जैन (बैद)
इन्द्रपुरी, पटना

युवाचार्य साध्वी श्री शुभम्जी महाराज के संथारापूर्वक पूणे में देह त्याग का समाचार सुनकर हमलोग स्तब्ध रह गये। परम पूज्य आचार्यश्री चन्दनाजी महाराज के श्री चरणों में दीक्षा लेकर अपना सम्पूर्ण जीवन वीरायतन एवं समाज के लिये उन्होंने समर्पित कर दिया। वीरायतन राजगीर के निर्माण में परम पूज्य आचार्यश्री जी के कुशल नेतृत्व में आपका विशेष योगदान था। सम्पूर्ण मानव के कल्याण तथा पशु-पक्षियों के जीवदया के प्रति भी आपका अत्यंत ही लगाव था। आपका स्वभाव अत्यंत मृदुभाषी तथा हंसमुख था। सभी लोग आपसे बहुत जल्द ही प्रभावित हो जाते थे।

परम पूज्य आचार्यश्री जी एवं अन्य साध्वीवृन्द के साथ-साथ आपके श्री चरण भी हमारे निवास स्थान पटना में पड़े तथा आपका

प्रेम के साथ भोजन....!

आशीर्वाद हमें प्राप्त हुआ यह हमारे लिये सौभाग्य की बात है। आपके ओजस्वी प्रवचनों तथा मांगलिक से हम सभी सदैव लाभान्वित होते थे। आपके असामयिक कालधर्म से वीरायतन परिवार के साथ-साथ हमलोगों की भी क्षति हुई है। वीर प्रभु से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को चिर शांति प्रदान करें।

तमिलनाडु जैन समाज

सम्पूर्ण तमिलनाडु जैन समाज कि तरफ से युवाचार्य आदरणीय शुभम्जी को श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ। युवाचार्य शुभम्जी के दर्शनों का लाभ कई बार मिला। वे सरलमना एवं आगमज्ञाता थी। जीवन की बातों को सरल ढंग से समझाती थी। हम तमिलनाडु जैन संघ उनको भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

संध्या चन्द्रवदन पंचमिया- कलकत्ता

मांजी, बापुजी नी लाडली दिकरी, भाईयों नी प्रियबहन, विशाखा, श्रुति, मैत्रेयी नी प्रिय फैबा, तमारी अद्भुत मीठी हंसी शुभम्जी! तमे अमारा हृदय माँ वसो छो। वीरायतन ना कण-कण मां वसो छो। क्यारेय तमने नहीं भुली शकीअे। अमे तमने मिस करीअे छीअे।

पालीताणा, वीरायतन

साध्वी शुभम्जी महाराज तमारुं जीवन अमारा सौ माटे प्रेरणादायी हतुं। तमे अमारा जीवन मार्ग दर्शक हता। तमारो प्रेमाळ, दयालु, हंसतु, हंसावतु स्वभाव क्यारे पण अमें भूली नहीं शकीये। महावीर भगवान तमारा आत्माने परमशांति आपे एवी प्रार्थना।

डॉ. मंगल सांड- यू.एस.ए.

सुमन जैसी खिली-खिली तुम,
महकती हम सबको छोड़ गई,
जहाँ भी रही और चली तुम,
राहियों के कदम, सच की ओर बढ़ाती गई,
शुभंकरी बन स्व-पर के शुभ को,
आकार तुम देती रही,
पदचिह्नों की पावन धूली तुम्हारी,

सिर पर लगाने के काबिल हुई,
जनहित उपकारों की वाणी और सत्कर्मों की-
सुन्दर छवि तुम्हारी, जग-जीवन में छा गई,
मीठी-मीठी मंगल यादें बन
दिल दिमाग में समाने लगी,
बस एक ही शिकवा है तुमसे कि,
ऐसी भी क्या जल्दी थी तुम हमें यूं छोड़ गई,
यह दिल बार-बार कहता है तुम
हमें छोड़ कहीं नहीं गई।
मधुर मंगल स्मृति तुम्हारी,
पथ दीप बनकर अमर हुई,
पथ दीप बनकर अमर हुई,
जय श्री शुभमजी! जय श्री शुभमजी!!

गीतम मिश्र- श्री जैन श्वेताम्बर भंडार तीर्थ, पावापुरी जलमंदिर

शतावधानी युवाचार्य श्री शुभम्जी के 2 जनवरी 2021 को अचानक पंचतत्त्व में विलीन होने से काफी क्षति पूरे जैन समाज एवं वीरायतन को हुई है। वीरायतन के लिए उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित कर दिया था। सेवा, शिक्षा और साधना के तीन सूत्री कार्यक्रमों को साकार रूप प्रदान करने के लिए आचार्यश्री ताई मां के दिशा निर्देशन में अपना कर्त्तव्य निर्वहन किया। देश-विदेश में उनकी ख्याति शतावधानी के रूप में सर्व विदित थी।

नेत्र ज्योति सेवा मंदिरम् में आई कैम्प में मैंने उन्हें गरीब, वृद्ध मरीजों की सेवा करते देखा है। उनका कर्म के प्रति निष्ठाभाव विलक्षण था। अल्पायु में ही समाधिपूर्ण स्थिति में नश्वर शरीर को त्यागकर वे आगे की यात्रा पर निकल गयी। भगवान महावीर के शासन की एक अनमोल रत्न साध्वी श्री शुभम्जी के चरणों में भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

श्री कलकत्ता जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी संघ, पोलक स्ट्रीट

युवाचार्य साध्वी शुभम्जी अचानक विदाय थता श्री कलकत्ता जैन श्वेताम्बर संघ दु:ख व्यक्त करे छे। तेमनो निखालस चहेरो

बिना मिले वीरायतन से कोई जा नहीं सकता था....!

याद आवे छे तेमज नवलखा उपाश्रय मां पधारी ने अमोने तेमनी मधुर शैली मां प्रवचन फरमावी ने अमृतवाणी पीरसेल तेनी याद ताजी थाय छे। खरेखर तेओश्री अनासक्त, निस्वार्थ, सात्विक अने करुणामय हता।

सर्व ट्रस्टी, कमिटी सभ्यों वती अंत:करण पूर्वक भावांजलि।

केतन पारेख- अहमदाबाद

जेमनुं नामज शुभ ते व्यक्ति ने मळवा थी शुभ अने शुभ थाय ते नक्कीज। शुभम्जी महाराज अेटले करुणा, मातृत्व, प्रेम अने वात्सल्य नो भंडार, जेने मळवा थी एक अटूट प्रेमनी अनुभूति थाय। हमेशा हंसमुख चेहेरो अने सकारात्मक विचारधारा ना तेओ मालिक हता। मने तो तेमने मलवा थी एक आनन्द नी अने पोतापण नी अनुभूति सदैव रहेती। तेमनी साथेनी गोष्ठी हमेशा सहज, सुन्दर अने यादगार रहेती। मने गर्व छे के हुं अेमने आटला निकट थी मल्यो अने निरन्तर अेमना आशीर्वाद पाम्यों। महाराज साहेब भले स्वर्गलोक नी यात्रा ना प्रवास तरफ छे पण एमनी सुवास अने आशीर्वाद अमारा ऊपर वरसता रहेशे, एमां मने कोई शंका नथी। ताई महाराज नी कृपा आपणा ऊपर वरसती रहे अने अेमना आशीर्वाद थी आपणे आ घड़ी नो सामनो करी शकीअे।

गुरुमाँ श्री पुण्य हर्षलताजी महाराज

गुरुमां ताई माँ चन्दनाजी ना ज्ञान, करुणा अने प्रेम ना दरिया माँ खीलेलु एक पवित्र सुगन्धित, अनोखु पुष्प एटले युवाचार्य साध्वी श्री शुभम्जी। एक अनासक्त, नि:स्वार्थ, सात्विक अने करुणामय जीवन जीववानी कला धरावतुं एक पावन जीवन एटले साध्वी श्री शुभम्जी। एक हवाना झोंकानी जेम वहेतु प्राणदायक छता फक्कड़ जीवनना स्वामी एटले युवाचार्य साध्वी शुभम्जी। एमने विदाय आपता मन अत्यन्त व्यथित छे। छेल्ला त्रण अठवाडिया पहेला जोइन्डिस थता पूना माँ निष्णात डॉक्टरों नी

ट्रीटमेन्ट चालु हती। लीवर डेमेज नो निमित्त बनता आ आकस्मिक संजोग थयो। एमनु पवित्र जीवन आपणा माटे प्रेरक बनी रहे, एवी प्रभु चरणे प्रार्थना।

प्रदीप जैन
जैनसंघ एवं श्री दादावाड़ी, पटना

युवाचार्य श्रद्धेय शुभम्जी महाराज के देवलोक गमन से हम सभी स्तब्ध हैं। अल्पायु में ही वो प्रभु की शरण में चली गई। भगवान महावीर के शासन की एक अनमोल रत्न थी। प्रेम, करुणा, सेवा की एक मूर्ति थी। उनकी सम्पूर्ण जीवन यात्रा एक संदेश है जो अतुलनीय है। उनके सद्गुणों के द्वारा वो सदा जीवंत रहेगी। देवलोक गमन के कुछ घंटे पूर्व आचार्य श्री ताई माँ से उन्होंने मंगल आशीर्वाद पूर्वक विदाई ली यह कहते हुए कि 'हम अपने कार्यों को पूर्ण नहीं कर पाये'।

भरत दोशी, सचिव- श्री धनबाद
श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संघ

धनबाद श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संघ युवाचार्य साध्वीश्री शुभम्जी को शोक संवदेना के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करता है। 1980 के चातुर्मास में उन्होंने जो अवधान किया था, उससे सम्पूर्ण कोलफिल्ड अत्यन्त अर्चाभित और प्रभावित था। आज भी जैन-अजैन सभी उसे भूले नहीं हैं। उन्होंने जो

शुभम्जी का मरीजों के लिए संदेश होता था, 'ताड़ी, बीड़ी और शराब' केवल स्वास्थ्य के लिए ही खतरनाक नहीं, परिवार की व्यवस्था को भी नुकसान पहुंचाता है। अत: आंखों के साथ जीवन की सही दृष्टि भी लेकर जाइए।

ज्ञान की गंगा प्रवाहित की थी वह आज भी निरन्तर बह रही है।

पूज्य आचार्यश्री ताई माँ का एक अनमोल रत्न युवाचार्य श्री शुभम्जी का इस तरह चले जाना जैन समाज की बहुत बड़ी क्षति है। पूज्य आचार्यश्री के मार्ग दर्शन में भगवान महावीर स्वामी का संदेश देश-विदेश में निरन्तर प्रचलित करने का कार्य उन्होंने अत्यन्त कुशलता एवं सहजता पूर्वक किया। उनके इस कार्य से दूर-दूर तक के लोग आकर्षित और प्रभावित है।

हमारा सकल श्री संघ सौम्य, सुशील और ज्ञानी-कल्याणी युवाचार्य पूज्य शुभम्जी महाराज के जाने से गहरे शोक का अनुभव कर रहा है। इस दु:खद घड़ी में हम सदैव वीरायतन परिवार के साथ हैं।

डॉ. प्रतिभा, देहली

शरीर नश्वर है। यह जानते हुए भी अपनों के जाने का दु:ख असह्य होता है। हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति और मोक्ष प्रदान करें।

राजेश चौरडिया- दादाबाड़ी, पटना

परम पूज्य पुण्यश्लोक, युवाचार्य श्री शुभम्जी के असामयिक निधन से हम सभी मर्माहत है। मानव सेवा के क्षेत्र में किए गए उनके उल्लेखनीय योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। भगवान महावीर की शासन परम्परा को आगे बढ़ाने में उन्होंने विशिष्ट योगदान दिया। वे जिन शासन की अनमोल रत्न थी।

वीरायतन के माली कहते हैं-
'हमारे काम को ही देखकर
खुश होते थे,
ऐसा नहीं, हमें भी देखकर
माताजी खुश होते थे और
हमें प्रेम से आशीर्वाद देते थे।
वीरायतन उनके बिना
सूना हो गया है।

उनका करुणापूर्ण व्यवहार लोगों के हृदय में सदा जीवंत रहेगा। उनके चरणों में पटना दादाबाड़ी परिवार श्रद्धा-सुमन अर्पित करता है।

नवीन सुचन्ती, कलकत्ता

मृत्यु सत्य है और शरीर नश्वर। यह जानते हुए भी अपनों के जाने का हम सभी को बेहद दु:ख होता है। पूज्य युवाचार्य साध्वी श्री शुभम्जी महाराज का आकस्मिक देह विसर्जन हम सभी के लिए एक अपूरणीय क्षति है।

अशोक कुमार कुचेरिया, पवई

युवाचार्य साध्वीश्री शुभम्जी के संथारा के शुभ भावों में काल गति को प्राप्त हो जाने की खबर अचानक मालूम हुई। साध्वीजी बहुश्रुत, मितभाषी एवं आध्यात्मिक गहराईयों के अधिकारी थे। आपकी कमी हमें चिरकाल तक महसूस होती रहेगी। वीर प्रभु आपकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

हर्षद अजमेरा, कोलकाता

युवाचार्य साध्वीश्री शुभम्जी का अचानक हम सबको छोड़कर परमात्मा के पास चला जाना, यह हमारे लिए तथा समाज के लिए बेहद दु:खद समाचार है। सद्गुणों से सम्पन्न उनका जीवन हम सबके लिए प्रेरणादायक रहे। यही परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ एवं श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

अजीत गांधी परिवार, औरंगाबाद

परम आदरणीय शुभम्जी महाराज के देवलोक गमन के समाचार सुनकर बहुत दु:ख हुआ। उनके विशेष आशीर्वादों को तथा अपार स्नेह को हमारा परिवार कभी भुला नहीं पायेगा। परमेश्वर उनकी आत्मा को चिरशांति प्रदान करें।

डोलर भाई हेमाणी, कलकत्ता

युवाचार्य साध्वीश्री शुभम्जी ना खेदजनक समाचार जाणी अत्यन्त दु:ख थयुं। तेओश्री साथे दीक्षा पहेलाथी परिचय थयेल अने त्यारपछी घणा वर्षो सुधी घनिष्टता रहेली। अवार-नवार दर्शने आववानु बनतुं। पूज्य गुरुदेव श्री नी निश्रा मां अनेक वखते आनन्द अने उत्साह थी बनेल प्रसंगों नजर समक्ष तरे छे। तेओश्री आपनी निश्रा मां सारी रीते ज्ञान दशा पामेल हता अने तेमनी कुशलता, विचक्षणता अने काबिलियत आपणा दृष्टि मां होवाथी आपे तेमने वीरायतन ना संचालननी जबाबदारी सोपवा माटे वारसदार तरीके जाहेर करेल। ते दर्शावे छे के तेओनुं अनोखु व्यक्तित्व हतु जे कारणे आपनी कृपादृष्टि ने पात्र बन्या। आवा साध्वीजी नानी वयमां स्वर्गारोहण करी जशे ते कल्पना बहार नी घटना बनी गई छे। वीरायतन ने न पुराय अेवी खोट पडी छे। आवी

श्रेष्ठ आत्मा पूज्य गुरुदेव श्री ना चरणों मां ज आगळ नी धर्मयात्रा माटे पहोचेला छे अने शाश्वतपद वहेलासर प्राप्त करशे। अमारा कुटम्बना सभ्यो तेमनी साथे गाढ़ परिचय मां रहेला छे तेथी दरेकना अंतरमां खेदवर्ती रह्यो छे तेओश्री ने व्यथित हृदय थी डोलर हेमाणी ना तथा कुटुम्बी जनो ना वन्दन।

Rekha Rajesh Bhansali, Kolkata

I am very sad to hear about Shubhamji Maharasa. She was very sweet and calm. All members of Veerayatan had a very good relationship with her. She was a very helpful person. She used to talk and hear everybody problem with the best of her heart and love. All the time there was a smile on her face. It is very difficult to forget Maharasa. We all pray for the peace of divine soul. I pray to God to give you all strength.

Dr. Pramod Upadhyay- CMO, NJSM

It's shocking to hear the news. Couldn't believe that Shubham Mataji is no more with us. Please accept my deepest condolences for the loss. May all of us be comforted by the outpouring of love surrounding her. Words cannot even begin to express our sorrow. May her heart and soul find peace and comfort. Our Shradhanjali.

Rajesh D. Mehta- Kolkata

Deeply shocked & saddened by the untimely kaaldharma of Pujya Yuvacharya Shubhamji Maharaj after a very short illness. A very religious, pious & cheerful soul. It is an irreparable loss to our Institution Veerayatan. We members of Veerayatan Kolkata pray to Lord Mahavira for giving eternal peace to her journey to the new world.

Ambrish- Rupa- USA

Extremely sorry for the demise of a wonderful Sadhviji like Shubhamshriji. A pure soul and an eloquent religion scholar, we will miss her forever. We sincerely pray to God to give strength to all of you at Veerayatan to bear the loss of a great "Saathi".

Leenaben Shah- Pune

Pujniya Shubhamji Maharaj with heavy heart and respect I pay my Shradhanjali. I cannot write her great knowledge, simplicity, endless experience and memories. She was like diamond for our Veerayatan. Very-very big loss to all of us. All her memories will be craved on my heart forever and purify my soul.

Utpal Parekh- USA

Very sorry to hear the sad news. Feels like a personal loss. Please convey the heartfelt condolences to Acharya Chandnaji from all of us including my mother Surbhi Parekh and sister Sonali.

Mr. Hasu J. Vora, London

On behalf of Jain Vishwa Bharati London, I would like to convey our deepest heartfelt condolences on your loss of beloved disciple Yuvacharya Sadhvi Shubhamji. She left us for heavenly abode at a very young age of 63 years. Respected Samaniji's have also conveyed their deepest condolences.

Rashmi and Satish- Los Angeles, USA

My husband, Satish, and I had the privilege of meeting Shubhamji Maharaj in January 2016. We were on a guided tour to · Samet Shikharji and we included Rajgiri so we could visit Veerayatan. When we reached Rajgiri we found out that our hotel bookings were cancelled to accommodate an International Convention being held at Veerayatan. While our guide went looking for new accommodations, we went to Veerayatan to pay respect to our departed parents. In Veerayatan we encountered Shubhamji whom we had never met before. She saw us from a distance and called out, "Awo Satishbhai, Rashmiben". Before we could ask her how she knew us, she told us our registration for the convention was ready... and so were our accommodations! To this day we do not know how she even knew us, let alone about our arrival. We were too awestruck by this · awesome human being, her soothing voice, her warmth and hospitality. This was once in a life time experience that we will cherish for

the rest of our lives.

Narendra Jasani- Kolkata

Shocked to hear the news. We pray for her.

Amar and Jyotsna Shah- USA

Jyotsna and I were saddened to hear the news of Shubhamji Maharaj. We spent some time reflecting and thinking of her. She has travelled to a new world and left us to follow her teaching and principles. We are saddened by her loss but have great memories of her. She was an amazing individual with a very pleasant nature. Shubhamji Maharaj was loving, caring, humble and an excellent guru. Her contagious personality led to many great relationships with people around the globe. Her guidance has made Jyotsna and I more spiritual and better human beings. During our travels with her around Bihar, she took a personal interest in our trip and accompanied us at various historical places. We will cherish her spiritual beliefs and continue to follow her teachings.

Shrimad Rajchandra Mission Dharampur (UK)

It is with great sadness that we learned the passing of Yuvacharya Sadhvi Shubhamji. Her loss will be felt greatly by all at Veerayatan but also all of us in the UK Jain community. We will miss her gentle compassion, kind smiling face and utmost humility.

We hope you, and all at Veerayatan including PujyaTai Maharaj and Pujya Shilapiji find comfort in the legacy of her work and the indelible mark she leaves on all those blessed with learning from and knowing her.

We share your loss and offer our deepest condolences. A shining soul such as hers will continue to bless all as it continues on the journey to liberation and everlasting peace.

Alok Kumar Sinha- Legal Advisor, Veerayatan

My respect to Sadhvi Shubhamji Maharaj. Our hearts are broken forever. People tell us that in time the pieces will eventually come back together. If this is true, though hard to believe now, there will always be a space, The piece to

which has your name on its place. Tears have been falling now for so long. When we think of your beautiful face, it all seems so wrong. You had so much to look forward to and so much left to do, But God needed somebody in heaven who is as special as you. Nothing is the same now, and we doubt it ever will be. You have been released from pain and suffering; you have been set free.

We miss your voice, your infectious laugh and hearing you praise Lord Mahavir. Birds you always loved and now you have new accessories- a pair of angel's wings. The world has lost a wonderful person, a true and amazing disciple of Pujya Tai Maharaj. But may be her goodness was needed to help and from heaven she needed to send. You are always around us, engulfing us with your love, Giving us strength, keeping us close and watching over us from above.... R.I.P. Shubhamji Maharaj.

Dr. Abhay Firodia
President, Veerayatan

The passing away of Sadhvi Shubhamji Maharaj has left us all very sad. It has shown us how limited and uncertain our powers, efforts and technology is. Dr. Thakkar, under your guidance your team did the best they could. The affectionate care and sincere efforts, made her last moments, less physically stressing for her. All who participated in treating her, wherever she was-to overcome her medical problem – successful or not, have earned her blessings, for doing their best.

Joining you in prayers.

Dr. Ajay Thakkar-
Chief at Jupiter Hospital, Pune

With utmost regret I have forwarded the message that I received from hospital at 7 am. Sadhvi ji left for her heavenly abode. She did not give us any chance to fight back or serve her. We tried our best. They tried their best God willing. We cannot fight His will. Me and my family will pray for her soul. Saddened.

Bhakti Kamdar, Mumbai

Tribute to respected Shubhamji Sadhviji. The loss of Shubhamji mahasatiji is very huge in many of our hearts. I remember her as a very knowledgeable, humble, caring, loving

and soft-spoken person. I was fortunate to spend some time with her very closely when she had visited to USA and had stayed with us for a day. I had learned some beautiful stavans from her which I sing all the time. Every time I think about her I see very calm and smiling face who is always ready to share her love and knowledge with everyone. It was very shocking for all of us when we heard about her departure but her long-lasting memories has touched thousands of people not only in India but many other countries. May her soul rest in peace.

Jinendra Bala Doshi (UK)

Veerayatan has a special place in my life, not that I manage to visit the place very often, it is the dedication of all sadhvijis has left a mark on my mind. The news of Shubhamji's departure came to me in an unusual manner giving me shock and jolt not being able to believe it. She was one of the most amazing person, with very kind heart, quick wit and humane values. I would like to write couple of incidences of personal experiences.

Once I was visiting Veerayatan at Powai Mumbai, before my departure, I went to pay my respect and said I am leaving. There upon she comes out, with gentle smile, “Do not say leaving, say I will be coming back and have lunch with us.” She will be very much missed in life.

Shashikant - Chandrakant - Meetal Koticha, Rajkot

Kindly accept our heartfelt condolences. Pray her soul may rest in peace. Our true respects, tribute and salutation to Yuvaacharya SHUBHAMJI Maharaj. Her life is great inspiration and encouragement for all of us and we live by the message of "Veetrag Prabhu" as taught to us. We one & all at Project "Life, Rajkot, India pray from the bottom of our heart that Lord Mahavir bless her soul and she constantly progress towards the epic of the highest spiritual mountain- "Siddha name is true!" Arihant name is true!"

Prabhulal Mehta, Toronto

We were deeply shocked to hear the news of early departure of Yuvacharyashri Shubhamji Maharaj from this earth.

Few years ago, we were blessed to have her stay at our home in Toronto area. She had tremendous knowledge which she was anxious to share with others. She was very simple,

undemanding and had a good sense of humor.

Everyday we see her innocent smiling face in front of our eyes. We miss her very much.

Baldota Family, Bangalore- Pune

There are times, when everyone has to traverse the path of sorrow. In this hour, we are with you, with heart felt wishes for a hope filled tomorrow. Our heart felt condolences to Veerayatan family.

Vikram and Harsha Mehta Chicago, USA

I am speechless, numb and heart is with full of sorrow and pain. My eyes cannot stop flowing with tears.

Param Pujya Shubhamji's pure beautiful soul, full of compassion and love for everybody left for journey to ultimate freedom.

Her wisdom and wise teaching is giving us some comfort. I think of her beautiful laughter, joyous nature, lively acceptance of everyone and everything without JUDGING anyone. Showering everything around her with love and compassion. Her love and laughter was contagious. She was generous and selfless, ready to give up anything and everything for others. She never asked or expected anything for herself, but was more than willing to give up everything for others' happiness. We all have yet a lot to learn from her life.

Pujya Shubhamji's knowledge and interpretations of scriptures were unparalleled. Her teaching was like a vast ocean of knowledge and her sermons were like a river flowing through mountains and rocks with full force that would take everything with her and you never can have enough of the beautiful melodious sounds like mesmerizing orchestra. And that music is and will always flow in ours and our children, Amee and Urmi and their families' hearts and minds.

We will always miss and remember Pujya Shubhamji and her every word, teaching, childlike beautiful laughter and her compassion and love for everybody and everything. World has lost a GREAT and PURE soul. Pujya Maa and Veerayatan have lost PRICELESS and PRECIOUS GEM.

Sanmati- Kolkata

We are all shocked upon hearing the news of Pujya Shubhamji's untimely demise. Very few people in this world manage to rise and distinguish themselves as exemplary human beings. She was one of them. We were blessed to have a few opportunities to gain knowledge from her. She touched our hearts. She was an excellent preacher of Jainism, within the country as well as outside. It is and irreparable loss to the whole Jain community may the divine

soul reach her ultimate goal. We will always miss her.

सज्जन बोथरा- चन्दनबाला स्वाध्याय मण्डल, पुणे

एक कोहिनूर हीरा इस धर्म जगत् से गायब हो गया। अश्रुओं की प्रणामांजलि के सिवा और कोई उपाय नहीं है। स्वनामधन्य साध्वीरत्न शुभम्जी आचार्यश्री चन्दनाश्रीजी की होनहार, तेजस्वी शिष्या रही है। संस्कृत, प्राकृत, इंग्लीश, हिन्दी आदि कई भाषाओं पर प्रभुत्व के साथ गहन अध्ययन, अद्भुत स्मरण-धारण और अभिव्यक्ति की शक्ति से सम्पन्न वे प्रज्ञावान शिष्या थी। हमेशा प्रसन्न रहना उनका सहज स्वभाव था। अपने स्वभाव की मधुरता एवं विशाल ज्ञान सम्पदा से उन्होंने दूर-दूर तक प्रभु महावीर को पहुँचाया था।

पशु-पक्षी भी उन्हें चाहते थे। वे उनके निकट सान्निध्य को पाकर प्रसन्नता से विचरण करते थे। दीन-दु:खी, अपंग-असहाय की सेवा वे तत्परता से करती थी। एक निस्पृह, निराकांक्ष, निर्लेप व्यक्तित्व हमसे दूर-सुदूर चला गया। गुणाकर, शुभंकर, प्रियंकर साध्वीश्री शुभम्जी को मेरी तथा मेरे चन्दनबाला स्वाध्याय मण्डल की ओर से भावभरी श्रद्धांजलि।

पद्मा बांठिया- पूना

जिनकी वृत्ति शुद्ध और प्रवृत्ति शुभ थी, जिन्होंने सृष्टि में आत्मीयता की वृष्टि की, जिनके रोम-रोम में अध्यात्म प्रवहमान था, श्रुतधर उपाध्याय श्री अमरमुनि महाराज जिनके गुरु थे, पूज्य बाई महाराज श्री सुमति कुंवरजी महाराज के समत्त्वभाव को जिन्होंने

संघ, समाज और आत्मीय लोगों के बीच शुभम्जी उपस्थित।

अपने जीवन का धन बनाया था, जिन्होंने श्रद्धेय आचार्यश्री चन्दनाश्रीजी पूज्य ताई माँ के अन्तेवासी होने का लाभ याने आत्मा में स्थान पाया था, उनकी कीर्ति पताका चतुर्दिक लहरा रही हैं। वीरायतन के अद्वितीय, अमूल्य कार्यों को जिन्दादिली से सागरों पार पहुँचाकर प्रभु महावीर की वाणी की सेवा की। उनके चरणों में श्रद्धा सुमन-वन्दन।

राजेश भाई कमाणी- प्रमुख, दीपक भाई देसाई- मंत्री, टाटानगर श्री संघ, जमशेदपुर

परम पूज्य युवाचार्य शुभम्जी ना देह त्याग ना समाचार जाणी समाजना सर्व सभ्यो ने आघात लाग्यो छे।

परम पूज्य शुभम्जी महासतीजी नो अमारा श्री संघ उपर अनेक उपकार अमी दृष्टि तथा प्रेम हतो। तेओ अत्रे बे त्रण वार पधार्या हता त्यारे जे पण तेमना सम्पर्क मा आव्या ते बधा साथे तेमनी आत्मीयता बंधाय गयी हती। जेवुं तेमनुं नाम हतुं तेवा ज तेमना गुण हता। शुभ साधना, शुभ भावना, शुभ प्रेम, शुभ सेवा आ बधा गुण तेमनामां हता। आवा मायालु गुरु आपणा वच्चेथी विदाय ले त्यारे दु:ख थाय ते स्वाभाविक छे। तेओ परोपकारी तेमनी मार्ग दर्शक व्यवहारिक दक्षता नम्र तथा शांतिप्रिय स्वभाव थी

तेमने अमारा श्री संघना दरेक सभ्यना मन जीती लीधा हता। आपनी सुवास चंदननी जेम सुगंध अने शीतलता फेलावती रहेशे।

युवाचार्य पूज्य शुभम्जी नी विदाय थी वीरायतन परिवार ने न पुरी शकाय तेवी खोट पड़ी छे। तेमने श्रद्धांजलि आपवा अत्रे अेक दिनांक-04.01.2021 ना रोज गुणानुवाद सभा राखवामां आवेल हती। परम कृपालु परमात्मा तेमना पवित्र आत्माने परम शांति अर्पे, अेज प्रार्थना।

श्री समीर भाई, जमशेदपर

श्री स्वामी शुभम्जी के देह-विसर्जन के दु:खद समाचार प्राप्त हुए। हमारा संघ यह समाचार सुनकर मर्माहत हो गया है।

शुभम् नाम में ही सर्व-गुण समाये हुए थे। स्वयं का सम्पूर्ण जीवन, सेवा-शिक्षा और साधना में लगा दिया था। वीरायतन में आए हुए सभी लोगों के प्रति उनका अलग ही एक विशिष्ट व्यक्तित्व उभरके हमेशा आता था। दयावान कृपानिधान, उन्नत भाल प्रदेश, जीवंतता का स्थायी भाव ये सब अनमोल हीरे उनकी संचित

सम्पत्ति थी। आपकी इच्छा से जब-जब वे जमशेदपुर पधारीं तब-तब अति सहज भाव से जो भी उनके भीतर नैसर्गिकता के साथ प्रगट हुआ उसे संघ के समक्ष रखा और अपनी तेजस्वी वाणी से ज्ञान की गंगा बहाई। अति सरल, सौम्य, शांत मुखाकृति से सबको आकर्षित करनेवाली और अपनी निर्मल-स्वच्छ आँखों में उस परम सत्य की झांकी करानेवाली ये महान आत्मा सदा सर्वदा के लिए हमारे हृदयों में समाविष्ट हो गई है। जैन धर्म की गरिमा और अस्मिता में चार चाँद लगाने वाली स्नेहिल साध्वी अचानक अपनी लीला समेटकर परम धाम को सिधार गई, जिसका दु:ख और अफसोस हमें हमेशा रहेगा।

भावना शाह- कलकत्ता

निखालस मन, प्रसन्न वदन, शालीन व्यवहार प्राज्ञता दर्शाती वाणी का शुभ नाम युवाचार्य साध्वी श्री शुभम्जी। सन् 1971 से दीक्षा के पूर्व से हम साथ रहे। वीरायतन के प्रचार के लिए वीरायतन बालिका संघ की सदस्या के रूप में अनेक प्रान्तों की यात्राएँ की। मित्रता गहरी होती गयी। वीरायतन राजगृह आने के बाद वे दीक्षित होकर साध्वी श्री शुभम्जी हुए। जीवन के लम्बे समय में आचार्यश्री ताई माँ के आशीर्वाद से वे निरन्तर

ऊँचाई की ओर बढ़ती गयी। वे युवाचार्य हुए किन्तु पद के बड़प्पन का कोई भार नहीं था। वही रूप-वही आत्मीयता भरा जीवन। 50 वर्ष की अवधि में कभी अनचाहापन या अप्रियता जैसा कुछ नहीं आ पाया। नियति के वज्रपात ने बहुत गहरी क्षति पहुंचाई। अत्यंत आदर के साथ अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

अतुलभाई दोशी- प्रमुख, श्री हंसराज लक्ष्मीचंद कमाणी जैन भवन- कलकत्ता

नया साल ऐसी शोकयुक्त खबर ले आयेगा ये किसको पता था! साध्वीश्री शुभम्जी महासतीजी ने, आचार्यश्री चंदनाश्रीजी के विचारों और उनके पथ पर साथ-साथ, कंधे से कंधा मिलाते हुए वीरायतन के विकास में समुचित योगदान दिया। श्री कमाणी जैन भवन के कई अवसरों पर युवाचार्य साध्वी शुभम्जी महासतीजी का आगमन हमारे श्री कमाणी जैन भवन में हुआ, और हमें उनकी वाणी का लाभ भी मिला है...

जिसे हम अपना सौभाग्य मानते हैं। साध्वीजी की विदाय से समस्त श्री कमाणी जैन भवन संघ मर्माहत एवं दु:खी हैं। उनकी आत्मा परम शांति को प्राप्त करते हुए मोक्षगामी बने ऐसी शासन प्रभु के चरणों में अभ्यर्थना।

दिनांक- 06.01.2021 को प्रात: 9:00 बजे, श्री कमाणी जैन भवन में आचार्यश्री चन्दनाश्रीजी की सुशिष्या युवाचार्य पूज्य शुभम्जी महाराज साहब की गुणानुवाद सभा आयोजित की गई थी, जिसमें सैकड़ों लोग उपस्थित थे।

कुमकुम हर्षद दोशी- कलकत्ता

तुम मुख पर हंसी सदाये रहेती,
आंखों तमारी सदाये हंसती,
सदेहे आज नथी तमारी हस्ती
छता यादी सहुना हृदये बसती।
शुभम्जी महासतीजी जेवुं नाम
तेवाज गुण तेमना आचार, विचार,
व्यवहार वर्तन मां हमेशा शुभ भाव
झंकृत हता।
देवलोक थी अमारा ऊपर
आशीर्वाद वरसावता रहे
आ प्रार्थना।

तरु गांधी- अध्यक्ष, श्री जीवन जागृति महिला मण्डल, जमशेदपुर

युवाचार्य श्री शुभम्जी के अचानक देहविलय के समाचार सुनकर सबको अत्यन्त

प्रेम पूर्ण उपहार के साथ अच्छाईयाँ भी लेकर जाइए और बदले में अपनी बुराईयाँ यहीं छोड़ छोड़कर जाइए- यह मार्गदर्शन होता था शुभम्जी का....!

दु:ख हुआ। हमें वीरायतन से साध्वी शुभम्जी का अनेक बार लाभ मिला है। 2019 में महिला मण्डल की स्वर्ण जयंति के अवसर पर भी वे पधारी थी।

सचमुच वे एक विरल विभूति थे। उनका जीवन संस्कार, साधना, शिक्षा और सेवा के लिए समर्पित था। भगवान महावीर के सिद्धांतों को उन्होंने अपने जीवन में आत्मसात किया था। गंभीर, शान्त, आत्मतत्त्व के अनुभवी, आगमज्ञाता, प्रवचन प्रभावक जिनशासन का सितारा, स्नेह की सरिता जैसे अनेक गुणों के वे धारक थे। चन्दनबाग का महकता हुआ एक पुष्प हमेशा के लिए मुरझा गया। दिवंगत आत्मा को शांति प्राप्त हो, यही प्रार्थना।

कमल खिंवसरा- पूना, महाराष्ट्र

साध्वी रत्न परम पूज्य श्री शुभम्जी का पूना में समाधि मरण प्राप्त हुआ, यह सुनकर एकदम धक्का-सा लगा कि यह कैसे हुआ। मन सुन्न हुआ पर यह सच था।

शुभम्जी की शांत सौम्य आंखें सामने दिखती हैं। उनका स्वभाव सरल व शांत था। उनकी सिखाने की शैली बहुत ही अच्छी थी। जैन समाज की और विशेषत: वीरायतन की बड़ी क्षति हुई है। ताई महाराज ने उन्हें अपना उत्तराधिकारी घोषित किया था।

उन्हें हमारी खिंवसरा परिवार, विशेषत: आदेश खिंवसरा की ओर से भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। उनकी आत्मा कहीं भी हो, उन्हें शांति मिले।

ओमान जैन समाज- मस्कत

युवाचार्य विदुषीरत्न श्री शुभम्जी नु टुंकी बीमारी बाद स्वर्गवास थयुं जाणी सकल संघ ने खुबज दु:ख थयुं छे। पूज्य आचार्यश्री चन्दनाश्रीजी नी कृपादृष्टि थी अमोने शुभम्जी नो, तेमनी विद्वत्ताभरी वाणी नो घणोज लाभ

पापा तुम कहते हो कि
शुभम् माताजी भगवान के घर गए!
तुम उन्हें मुम्बई छोड़कर आए,
पर भगवान के घर छोड़ने
शुभम् माताजी के साथ कौन गया?
3 वर्षीय आद्या ने
अपने पापा 'अमोल' से पूछा....!

मल्यो छे। तेओश्री मां आटली विद्वत्ता होवा छतां सरलता, ज्ञान उपलब्ध होवा छता निरभिमानता, देश-विदेश मां विचरण होवा छता सात्त्विकता आदि अनेक गुणों थी शोभती गरिमा हती। पर्वाधिराज पर्युषण महापर्वना तेमना विद्वता सभर प्रवचनों सहुने खुबज गमता। बस पूज्य शुभम्जी नो आत्मा परमशांति पामें प्रभुचरणें प्रार्थना।

जाह्नवी, शोभा रसिकधारीवाल, पूना

युवाचार्य शुभम्जी की विदाई असहनीय है। हर प्रसंग पर, हर मोड़ पर याद आयेंगे। घोड़ नदी के गौरव थे। हमारी भावपूर्ण श्रद्धांजलि।

Dinesh, Rekha Shah, Manchester

Our Sincere condolences to Veerayatan and Subhamji Maharaj's family on her demise. This is a big shock to us all. Our thoughts and prayers are with Veeraytan Sadhvis , her family and those who knew Maharaj. We pray that all get strength to go through these difficult times. Subhamji Maharaj will be missed by all who came across her. May her soul rest in peace.

Kamdar Parivar, Malaysia

Deepest condolences on the untimely demise of Yuvacharya Sadhvi Subhamji. May her soul rest in peace.

Prof. Ratan Jain, Delhi

It is so sad. It is unbelievable. A great loss.

Kamal Oswal & family

Shocking news! Her smiling face would always be remembered. May her soul rest in peace. Please convey our deepest condolences to Tai Ma.

Mahesh Pramila Shah, Marryland USA

Our deepest condolences. May her soul rest in peace She will be remembered forever for her contributions to our society.

भानु मेहता, टोरन्टो

पूज्य युवाचार्य साध्वीश्री शुभम्जी महाराज ना स्वर्गवास ना समाचार मलतां अमने खूबज शोक लाग्यो। आ वात मानवामां आवती ज नथी के तेओए आपणी वच्चेथी विदाई लीधी छे। एवुं ज लागे छे के तेओ आपणी साथे ज छे।

अमे खूब भाग्यशाली छीए के शुभम्जी महाराज केटलाक वर्षों पहेला टोरन्टो (केनेडा) मां अमारी साथे रहया हता। अने तेमनी साथे समय व्यतीत करवानो तेमज शास्त्रोना तेमना उंडा अभ्यासमांथी कंइक अंश ग्रहण करवानो उत्कृष्ट लाभ अमने मल्यो हतो।

तेमनो कायमी आनंदित हंसमुखो निखालस चहेरो निरंतर आंखों समक्ष तरी रह्यो छे। अमने खात्री छे के तेमनो उच्च आत्मा मोक्षमार्ग तरफ प्रयाण करी रह्यो छे। तेमना श्री चरणों मां भावपर्वूक श्रद्धांजलि अर्पित करूं छुं।

डॉ. दिलीप धींग

निदेशक: अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र

यह जानकर अत्यंत दु:ख हुआ कि वर्ष 2021 के दूसरे ही दिन पूज्या युवाचार्य साध्वीजी ने सबको अलविदा कह दिया। माता-पिता की मौजूदगी में ही युवा संतति के चिर-वियोग जैसा दु:खद प्रसंग है यह। यह प्रसंग वीरायतन परिवार के अलावा उन सभी अगणित महानुभावों को भी व्यथित कर गया, जो वीरायतन के सर्वजन हितकारी और सर्वजीव हितकारी सेवा-साधना के कार्यों के अनुमोदक हैं। वीरायतन संस्था अत्यंत समत्व और समर्पण भाव से भगवान महावीर के सन्देशों को आम आदमी एवं दुनिया तक पहुँचा रही है। इस कार्य में उनका भी हर प्रकार से सहयोग जुड़ा हुआ था। उन्होंने अपनी साधनामय भूमिका से सबको प्रभावित किया। उनकी कार्यशैली और प्रेरणाएँ सबका मार्गदर्शन करती रहेंगी। हार्दिक श्रद्धा-सुमन।

अशोक तुरखिया, कलकत्ता

जैन समाज के एक अनमोल रत्न की ये संसार से विदाई बहुत दुखद है। परम कृपालु ऐसे सरल आत्मा को भव भ्रमण से मुक्त कर शाश्वत शांति प्रदान करे, ऐसी अन्त: करण से प्रार्थना।

युवाचार्य शुभम्जी की स्मृति में लगातार श्रद्धांजलि पत्र आ रहे हैं किन्तु खेद के साथ सूचित किया जा रहा है कि समयाभाव के कारण सभी को सम्मिलित नहीं कर पा रहे हैं...